UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180619
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82 P92P Accession No. H 1371

Author प्रेम; धनीराम.

Title प्राणेश्वरी. 1931

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्राणेश्वरी

[सङ्गीतमय सुखान्त नाटक]

लेखक—

डॉक्टर धनीराम प्रेम

एम० आर० सी० एस० (इङ्ग०)

एल० आर० सी० पी० (लन्दन)

प्रकाशक—

'चाँद' कार्यालय

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

अक्टूबर, १९३१

प्रथम बार २,०००]

[मूल्य ॥)

FIRST EDITION

Two Thousand Copies

Printed and Published

by

Sh. LAKSHMI DEVI

at

THE FINE ART PRINTING COTTAGE

28, Edmonstone Road

Chandralok—Allahabad

October

1931

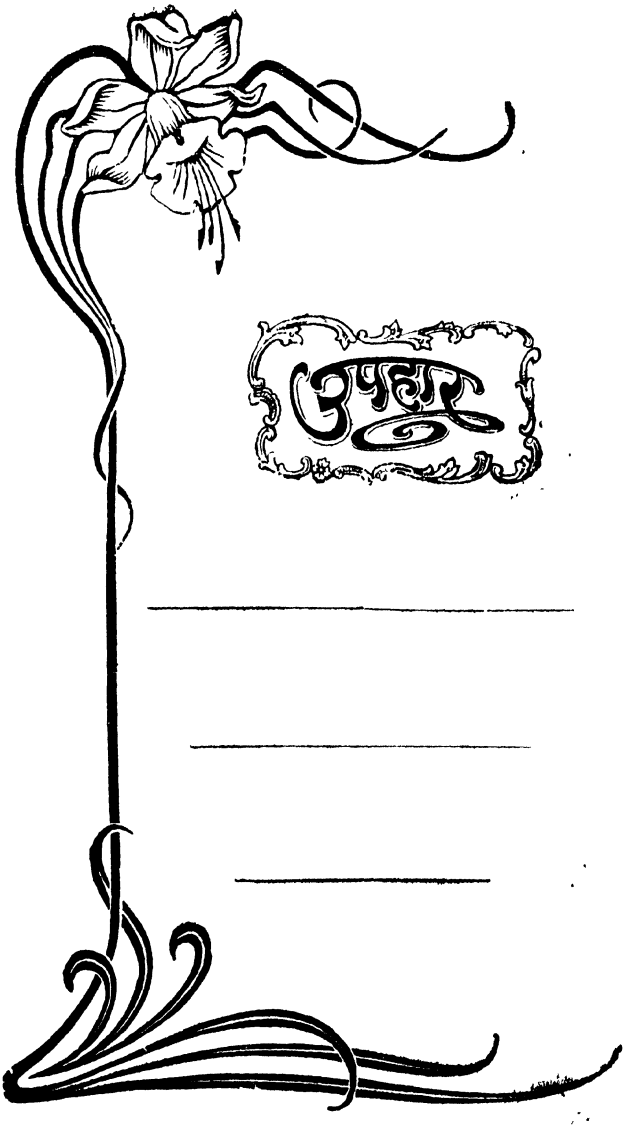
उपहार

आवश्यक सूचना

इस नाटक के खेलने, अनुवाद करने, फ़िल्म बनाने, गानों के उद्धृत करने आदि के सारे अधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित हैं। इनके लिए व्यक्तियों तथा कम्पनियों को लेखक की आज्ञा अवश्य ले लेनी चाहिए।

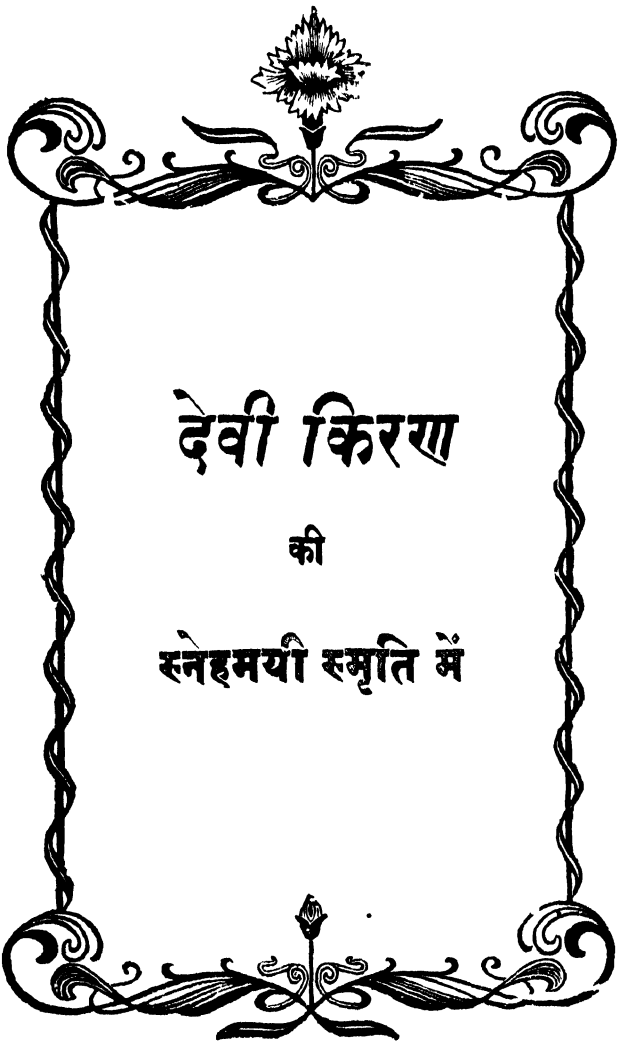

देवी किरण

की

स्नेहमयी स्मृति में

नाटक के पात्र

मदन—मालती का प्रेमी

दयाशङ्कर—कानपुर के एक वकील, मालती के पिता

प्राणनाथ—एक सङ्गीत-मण्डली का अध्यक्ष

गोपाल—मण्डली का हारमोनियमची

गणेश—मण्डली का तबलची

राजा श्यामदास—कलकत्ते के एक धनिक

मालती—दयाशङ्कर की पुत्री

लक्ष्मी—गोपाल की स्त्री

मायारानी—राजा श्यामदास की स्त्री

चपरासी, मैनेजर, पुलिसमैन, कवि आदि।

प्राणेश्वरी

[बालिकाओं का कोरस]

जय त्रिभुवनकर्त्ता, हे दुखहर्त्ता, सङ्कट हरो हमारे!
भवसागर में डूब जायँगे, भगवन्, बिना तुम्हारे!
कौन कहे तुम नहीं उपस्थित, कौन कहे तव बल है परिमित,
धरणीधर, विश्वम्भर, जय शङ्कर, तुम बिन कैसे चलें—
घड़ी भर कार्य सृष्टि के सारे। जय त्रिभुवन० ॥

पहला अंक

पहला दृश्य

[स्थान—कानपुर, लाला दयाशङ्कर का कमरा]

(मदन गुनगुनाता हुआ गा रहा है)

भाइयो, प्रेम का पन्थ निराला !
इस फ़ीकी दुनिया में केवल यह है गरम मसाला ।
जिसको मिले प्यार की बोतल अरु प्यारी का प्याला ।
कभी न निकले उसके सुखमय जीवन का देवाला ॥
भाइयो, प्रेम का पन्थ निराला ।

प्यारी के सङ्ग मिलें सास अरु सुसर व साली साला ।
बड़े प्रेम से जो हर समय पुकारें 'लाला', 'लाला' ॥
भाइयो, प्रेम का पन्थ निराला !

(लाला दयाशङ्कर का मैनेजर व चपरासी एक टेलीग्राम हाथ में लिए हुए चिल्लाते आते हैं)

बाबू जी का टेलीग्राम।

बाबू जी का टेलीग्राम॥

मदन—(भौंचक्का होकर) किस बाबू जी का?

मैनेजर व चपरासी—(दोनों मदन के चारों ओर चक्कर लगाते हुए)

बाबू जी का टेलीग्राम।

बाबू जी का टेलीग्राम॥

(दोनों देर तक आँख मींचे मदन के चारों ओर 'बाबू जी का टेलीग्राम' गाते हैं। फिर मदन भी उनके पीछे होकर वही गाने लगता है। कुछ देर तक इस प्रकार चक्कर लगाने के बाद चपरासी तार हाथ में देकर चला जाता है। मैनेजर खड़ा रहता है। मदन तार को खोल कर पढ़ता है। फिर एक साथ चिल्ला कर मैनेजर से पूछता है)

मदन—कहाँ है?

मैने०—कौन?

मदन—वही!

मैने०—कौन?

मदन—प्राणेश्वरी।

मैने०—मालती?

मदन—हाँ।

मैने०—क्यों, क्या हुआ?

मदन—देखो, तार में लिखा है—

"मैं इस तार के पहुँचने से पहले ही कानपुर पहुँच जाऊँगी।"

मदन—(स्वतः)—ओहो, मालती आ रही है, एक हाथ में एक लाख का चेक लिए और दूसरे में बेबी ऑस्टिन कार लिए।

मैने०—बाबू जी, कल तो आपकी सारी मुरादें पूरी हो जायँगी।

मदन—क्या पूछते हो, कल ही लाला जी हमारी सगाई के उपलक्ष में दावत दे रहे हैं। कल वास्तव में मालती मेरी हो जायगी। सारा संसार यह जान जायगा कि इस शताब्दी के सबसे बड़े दो प्रेमी एक हो गए। इस प्रेम-कहानी के सामने लैला-मजनूँ, मालती-माधव तथा रोमियो-जूलियट की प्रेम-कहानियाँ फ़ीकी पड़ जायँगी। (हर्ष में नाचने लगता है)

मैने०—मगर मिस मालती इतनी लेट कैसे हो गईं ?

मदन—कल उनकी बी० ए० की परीक्षा समाप्त हुई थी।

मैने०—अच्छा, तो मैं जाकर उनको तलाश करता हूँ।

मदन—सुनो, मैनेजर साहब, तुम्हारी उम्र कितनी है ?

मैने०—होगी तीस वर्ष की।

मदन—कभी तुमने प्रेम किया है ?

मैने०—क्यों ?

मदन—आह! घायल की गति घायल जाने। अगर तुमने प्रेम नहीं किया तो "तू क्या जाने हालते दर्दे जिगर, तूने दिलतो बुतों को दिया ही नहीं।"

मैने०—मैंने भी बुतों को दिल दिया था, मैं तुम्हारे दर्दे-जिगर की हालत जानता हूँ।

मदन—जानते हो, सचमुच ?

मैने०—हाँ, मैं जानता हूँ कि तुम प्रेम में पागल हो।

मदन—यह कही है लाख रुपयों की बात, जो कौड़ियों में जा रही है। तुम तो प्रेम के डॉक्टर हो! (हँसता है)

मैने०—ख़त का मज़मूँ भाँप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देख कर।

मदन—अच्छा, यह तो बताओ कि तुम अपनी प्यारी को क्या कह कर पुकारा करते थे ?

मैने०—(हाथ फैला कर ज़ोर से) प्रा-णे-श्वरी।

मदन—(नक़ल करता है)

मैने०—परन्तु यह नवीन प्रेमियों के लिए नहीं है।

मदन—फिर कोई ऐसा उपाय बताओ कि मालती मुझसे ख़ूब प्रसन्न हो जाय।

मैने०—यह तो बहुत सरल है। जितना ही स्त्री की उपेक्षा करो, उतना ही अधिक वह तुम्हें प्रेम करेगी। (दिखा कर) देखो, इस प्रकार कुर्सी पर बैठ कर समाचार-

पत्र पढ़ने लगो। जब मालती आवे तो सर उठा कर केवल यह कह देना 'हैलो।'

(मदन उसी प्रकार कुर्सी पर बैठ जाता है)

मैने०—(नेपथ्य की ओर कान करके) लो, यह मालती का शब्द है। वह इधर आ रही है, मैं जाता हूँ! गुड लक। (जाता है)

(मालती दौड़ी हुई आती है)

मालती—ओह, मदन!

(मदन पहले तो सर उठा कर धीरे से कहता है 'हैलो', परन्तु मालती को देखते ही चिल्ला कर कहता है, 'प्राणेश्वरी!' और मालती की ओर दौड़ता है)

मालती—ओह, मदन! कितने युगों के बाद यह पुनर्मिलन हुआ है!

मदन—यह वियोग सबसे लम्बा हुआ है। आज कौन सी तारीख़ है?

मालती—पाँच अप्रैल।

मदन—मेरा एल् एल्० बी० का फ़ाइनल पेपर किस दिन समाप्त हुआ था?

मालती—तीन अप्रैल को।

मदन—ओह! इस वियोग को १,७२,८०० सैकण्ड हो गए!

मालती—प्यारे!

मदन—प्यारी !

मालती—प्राणेश्वर !

मदन—प्रा-णे-श्वरी !

मालती—तुम बताशे हो !

मदन—तुम मिश्री हो !

मालती—मदन, तुम मुझे प्यार करते हो ?

मदन—मालती, तुम मुझे प्यार करती हो ?

(दोनों गाते हैं)

(गान)

मदन—

तुमको ईश्वर ने मेरे लिए बनाया ।
फिर हम दोनों को करके दया मिलाया ॥
तुम कहाँ थीं, मैं कहाँ था, कौन किसको जानता था ?
कौन किसको कुछ समय पहले कहो, पहचानता था ?
इस प्रेम ने हमको है यह दिन दिखलाया ।
तुमको ईश्वर ने मेरे लिए बनाया ॥

मालती—

दोनों हृदयों में हमारे प्रेम की दो धार बहतीं ।
नित्य ही वे बढ़ रही थीं, फिर अलग किस भाँति रहतीं ?
मैं भाग्यवती हूँ जो तुमने अपनाया ।
इस प्रेम ने हमको है यह दिन दिखलाया ॥

दोनों—

एक बन कर प्रेम की यह धार आजीवन बहेगी।
शक्ति कोई भी न जग में भिन्न हमको कर सकेगी।।
तुमको ईश्वर ने मेरे लिए बनाया।
फिर हम दोनों को करके दया मिलाया॥

(दोनों जाते हैं)

दूसरा दृश्य

[स्थान—लाला दयाशङ्कर के गृह का दूसरा भाग]

(लाला दयाशङ्कर व प्राणनाथ का प्रवेश)

प्राणनाथ—परन्तु इसमें मेरा दोष नहीं।

दया०—तुम्हारा दोष नहीं? और किसका दोष है? तुमसे हमने यह तय किया था कि दस बजे तुम अपनी मण्डली सहित यहाँ होगे, जिससे हम तुम्हारा सङ्गीत सुन सकें। परन्तु अभी तक तुम्हारी कोई तैयारी नहीं हुई। हम.....

प्राण०—लेकिन—

दया०—लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। तुम्हारी मण्डली कहाँ है? तुम्हारे बाजे कहाँ हैं? बारह बजे सब अतिथि एकत्रित होंगे। मैं उस समय उन्हें क्या मुख दिखाऊँगा?

प्राण०—परन्तु मेरे हारमोनियम व तबला बजाने

वाले मैमोरियल-वैल देखने गए थे, अभी तक लौट कर नहीं आए, शायद वे उसी में न गिर कर चल बसे हों। मुझे कुछ समय दीजिए।

दया०—समय दीजिए ? कितना समय और चाहते हो ? ग्यारह बजने को आए, फिर भी और समय दूँ ? नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं यहीं के किसी गाने वाले को बुलाए लेता हूँ। मैं अब अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता।

प्राण०—तो मैं क्या करूँगा ?

दया०—मैं कुछ नहीं जानता। मेरा तुम्हारा कॉन्ट्रैक्ट अब रद्दी हो गया।

प्राण०—मैं देहली से आपकी पार्टी के लिए ही आया था। इतना व्यय करने के बाद अब—

दया०—बस, इतना काफ़ी है। तुम अपने आदमियों को लेकर मेरे यहाँ से चले जाओ। मैं फ़ोन करके अभी दूसरी मण्डली यहाँ से बुलाए लेता हूँ।

(फ़ोन पर जाते हैं)

प्राण०—(दाँत चबा कर) अगर उन दोनों को पाऊँ तो कच्चा खा जाऊँ।

(जाता है)

दया०—(फ़ोन पर) हैलो, हैलो—हाँ, नूरा मास्टर है ?—नू-रा-मा-स्ट-र। अच्छा,—हैलो, मास्टर, फ़ौरन

तुम अपनी मण्डली को लेकर मेरे यहाँ आओ। १२ बजे पार्टी में सङ्गीत होगा।

(मालती तथा मदन का प्रवेश)

मालती व मदन—हैलो बाबू जी।

दया०—(फ़ोन छोड़ कर) हैलो, मालती, हैलो मदन! तुम दोनों को साथ देख कर मुझे बड़ा हर्ष होता है!

(मालती व मदन पास आ जाते हैं। दयाशङ्कर उन्हें अपने पास खड़ा करके प्यार करते हैं)

दया०—मालती, तुम्हारे पर्चे कैसे हुए?

मालती—और तो सब पेपर्स अच्छे हुए हैं, बाबू जी, मगर पॉलिटिक्स के पेपर में फ़र्स्ट क्लास मार्क्स शायद न आवें।

दया०—हिन्दू-यूनिवर्सिटी में पॉलिटिक्स के ज़्यादा विद्यार्थी तो नहीं हैं?

मालती—इस वर्ष तो केवल दस हैं!

दया०—कुछ परवाह नहीं, इण्टर की भाँति बी० ए० में भी तुम प्रथम आओगी।

मालती—आपके आशीर्वाद से, देखिए।

दया०—(मदन से) मदन, तुम्हारा रिज़ल्ट कब आउट हो रहा है?

मदन—एम० ए० का तो शीघ्र ही होगा, मगर लॉ (क़ानून) का मई में होगा।

दया०—अच्छा, यह बताओ कि तुम दोनों बच्चों में कोई झगड़ा तो नहीं है ?

मालती तथा मदन सिर नीचा कर लेते हैं।

दया०—मदन, मेरे लिए यह दिन बड़े हर्ष का है। मैं विवाह को खेल नहीं समझता। मैं इस बात में विश्वास नहीं करता कि बच्चों के विवाह का सारा भार माता-पिता पर ही है, तथा बच्चों को अपने भाग्य-निर्णय का कोई अधिकार नहीं। मैं साथ ही पश्चिम की विवाह-परिपाटी को भी आदर्श नहीं समझता। मैं विवाह को पवित्र प्रेम-बन्धन समझता हूँ। विवाह में, इसलिए, पवित्रता तथा प्रेम दोनों होने चाहिए। हिन्दू-विवाहों में प्रेम नहीं, पवित्रता है। पश्चिमी विवाहों में प्रेम है, परन्तु पवित्रता नहीं। मैं वर्षों से यह आशा कर रहा था कि एक दिन मालती के विवाह में इन दोनों आदर्शों—प्रेम तथा पवित्रता—का सम्मिश्रण कर सकूँगा। मुझे यह देख कर हर्ष होता है कि मेरे हृदय की एकमात्र साध पूरी हो रही है। मुझे हर्ष है कि तुम दोनों एक दूसरे को प्रेम करते हो तथा हिन्दू-आदर्शों के अनुसार दोनों एक होने जा रहे हो। मैं तुम्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूँ और परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा आदर्श हिन्दू-समाज के नव-युवकों में विवाह की यथोचित प्रणाली का प्रसार करे।

(प्रस्थान)

मदन—मुझे बाबू जी के विचारों के कारण उन पर बड़ी श्रद्धा है।

मालती—सम्बन्धियों ने तो इस प्रकार के विवाह पर बड़ी आपत्तियाँ उपस्थित की थीं, परन्तु बाबू जी ने किसी की भी न सुनी। जब से वकालत छोड़ी है, बाबू जी समाज-सुधार के कार्यों में ही समय व्यय करते हैं।

मदन—मालती!

मालती—मदन!

मदन—मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ जो ऐसे पिता की पुत्री मुझे मिल रही है।

मालती—यह ईश्वर का ही धन्यवाद है कि हम दोनों इस प्रकार एक हो रहे हैं। (कुछ सोच कर) हाँ, एक बात तो मैं भूल ही गई। तुमने राजा श्यामदास का नाम सुना है?

मदन—क्या कलकत्ते वाले राजा श्यामदास?

मालती—हाँ।

मदन—भला उन्हें कौन नहीं जानता? सारे हिन्दू-समाज में उनका नाम विख्यात है।

मालती—कभी उन्हें देखा है?

मदन—नहीं, देखने का अवसर तो नहीं मिला।

मालती—अच्छा, आज तुम उन्हें देख लोगे।

मदन—आज?

मालती—हाँ, आज बारह बजे।

मदन—कहाँ ?

मालती—यहाँ, इसी घर में।

मदन—क्या वे पार्टी में आ रहे हैं ?

मालती—हाँ, मगर बाबू जी अभी नहीं जानते। मैं उनसे जाकर कहूँगी।

मदन—बाबू जी नहीं जानते ? और वे पार्टी में आ रहे हैं ?

मालती—मैंने उनको निमन्त्रण दिया था। वे सपरिवार मेरे साथ एक ही डब्बे में बनारस से आए थे। उनकी स्त्री से जान-पहचान होगई। मैंने उन दोनों को निमन्त्रण दिया, जो उन्होंने स्वीकार कर लिया। कल वे इलाहाबाद उतर पड़े थे। इस गाड़ी से अब आते होंगे।

मदन—ओह, मालती, तुम पगली हो। भला राजा श्यामदास इस प्रकार हर एक के यहाँ चले जायँगे ? तुम्हारा मन रखने के लिए उन्होंने कह दिया होगा। इलाहाबाद से इतना शीघ्र वे कानपुर नहीं आ जायँगे।

मालती—वे आएँगे और अवश्य आएँगे।

मदन—और मैं समझता हूँ कि वे नहीं आएँगे।

मालती—अच्छा तो देख लेना।

मदन—अच्छा तो देख लेना।

(दोनों जाते हैं)

तीसरा दृश्य

[स्थान—लाला दयाशङ्कर का बाहरी कमरा]

(चौकीदार बैठा हुआ है। गोपाल आता है)

गोपाल— चौकीदार !

चौकीदार—सरकार !

गोपाल—इधर आओ।

(चौकीदार पास आता है)

गोपाल—तुम शराब तो नहीं पीते ?

चौकीदार—नहीं, सरकार !

गोपाल—भाँग ?

चोकीदार—नहीं, सरकार !

गोपाल—तमाखू ?

चौकीदार—नहीं, सरकार।

गोपाल—कितने वर्षों से यहाँ नौकरी करते हो ?

चौकीदार—पचास वर्षों से।

गोपाल—पचास ? तो तुम्हारा उम्र कितनी है ?

चोकीदार—साठ वर्ष की, सरकार। दस वर्ष की उम्र से ही मालिक की नौकरी कर रहे हैं, हुजूर।

गोपाल—तो तुम विश्वास-पात्र हो ?

चौकीदार—रुपया, पैसा, चीज़ वर्त सब मेरे पास चौकस रहेगी, सरकार !

गोपाल—अच्छा, लो हमारी यह छड़ी सँभाल कर रख लो। देखो खोने न पावे, आज ही ढाई आने में लाया हूँ।

चौकीदार—(छड़ी लेता हुआ उपेक्षा से) आपका नाम क्या है ?

गोपाल—लाला गोपालदास वल्द गुलाबदास साकिन मौज़ा घीसूपुर, डाकख़ाना लीदूपुर, ज़िला मेरठ।

चौकीदार—यह नाम है या किसी का वारण्ट ? आप की माँ आपको क्या कह कर पुकारा करती हैं ?

गोपाल—माँ ? (हँस कर) माँ तो इस तरह पुकारती हैं—'अरे गुपाल होय।'

चौकीदार—तो मैं क्या कह कर पुकारूँ ?

गोपाल—तुम ? ज़रा ठहरो। (सोच कर) तुम गोपाल कह कर पुकारा करो।

चौकीदार—अच्छा तो आपही का नाम गोपाल है ?

गोपाल—क्यों, क्या कोई पारसल आई है ?

चौकीदार—आपको प्राणनाथ खोज रहे थे ?

(प्राणनाथ आता है तथा गोपाल के पीछे खड़ा हो जाता है)

गोपाल—राँड़नाथ ?

चौकीदार—प्राणनाथ !

गोपाल—लेकिन हम सब तो उसे राँड़नाथ कहते हैं।

(प्राणनाथ क्रोध में आकर बाहें चढ़ाता है, चौकीदार चल देता है। गोपाल जब मुख फेरता है और प्राणनाथ को खड़ा हुआ पाता है तो उसके भाव बदल जाते हैं।)

गोपाल—(धीरे से) ओहो, प्राणनाथ !

प्राणनाथ—प्राणनाथ या राँड़नाथ ?

गोपाल—वह तो मज़ाक़ थी।

प्राणनाथ—अब मैं मज़ाक़ नहीं बरदाश्त कर सकता।

गोपाल—(हँस कर) ओहो, आप मज़ाक़ नहीं बरदाश्त कर सकते ? तो क्या किसी को दफ़ना कर आए हैं ?

प्राणनाथ—(क्रोध में) दफ़ना कर तो नहीं आया, पर अब दफ़नाने जा रहा हूँ।

गोपाल—ऐसा है ? मुझे दरअसल बड़ा अफ़सोस है। क्या घर से कोई तार आया है ?

प्राणनाथ—घर से तार नहीं आया, तुम्हें दफ़नाने जा रहा हूँ।

गोपाल—मुझे ? क्यों, क्यों, ख़ैर तो है ?

प्राणनाथ—क्या समय है अब ?

गोपाल—समय ? मैं अपनी घड़ी तो देहली ही छोड़ आया। क्या मैं लेट हूँ ?

प्राणनाथ—लेट ? अब ग्यारह बजे हैं।

गोपाल—तो मैं लेट हूँ ?

प्राणनाथ—मैं ऐसे आदमियों को अपनी कम्पनी में रख कर लज्जित हूँ।

गोपाल—तो आपका पक्का विचार है कि मैं लेट हूँ?

प्राणनाथ—हाँ, तुम लेट हो, लेट हो, लेट हो। अब तुम्हें छुट्टी है।

गोपाल—छुट्टी कितने दिनों की?

प्राणनाथ—सदा के लिए।

गोपाल—तो इसका मतलब है कि—

प्राणनाथ—तुम मेरी नौकरी से अलग हुए।

गोपाल—(फ़ौजी सलाम करता है)

प्राणनाथ—और गणेश से कह देना कि वह भी मेरी नौकरी से अलग है।

(जाता है)

गोपाल—(गाता है)

(गाना)

हाय, नौकरी बुरी बला है!
कभी जा इधर, कभी जा उधर,
यह कर, वह कर, रहता दिन भर।
नहीं ज़रा भी स्वतन्त्रता है।
हाय, नौकरी बुरी बला है!!
मुखसे लग जाता है ताला,
गए, ज़रा भी शब्द निकाला।

सदा हृदय में भय रहता है।
हाय नौकरी बुरी बला है!!
स्वामी के हाथों बिक जाओ,
सदा उसी का हुक्म बजाओ।
नहीं, तुम्हारा यह रस्ता है।
हाय, नौकरी बुरी बला है!!

(गणेश का प्रवेश)

गोपाल—कहो गणेश, कहाँ रहे ?

गणेश—ज़रा मैसैकर (क़त्ल) घाट घूमने गया था।

गोपाल—अपने लिए तो यह घर ही मैसैकर घाट बन रहा है।

गणेश—क्यों, कोई नए समाचार ?

गोपाल—बड़े लम्बे-चौड़े।

गणेश—फिर सुनाओ !

गोपाल—राँड़नाथ ने मुझे छुट्टी दे दी है।

गणेश—छुट्टी ? कितने दिनों की ?

गोपाल—सदा के लिए।

गणेश—क्या ? तुम्हें नौकरी से अलग कर दिया ?

गोपाल—हाँ, और तुम्हें भी छुट्टी मिल गई है।

गणेश—क्या मुझे भी अलग कर दिया ? तो फिर क्या विचार किया है ?

गोपाल—कुछ भी हो। हम दोनों साथ हैं।

गणेश—सुख में, दुख में ?

गोपाल—सुख में, दुख में।

(तारघर का चपरासी एक तार लिए हुए आता है)

चपरासी—(गोपाल से) यह तार मिस मालती के लिए है।

गोपाल—(गणेश की ओर देख कर) मिस मालती ?

गणेश—(गोपाल की ओर देख कर) मिस मालती ?

चपरासी—हाँ, मिस मालती। वे यहीं तो रहती हैं।

गोपाल—यहाँ कोई मिस मालती नहीं हैं, यहाँ तो हवाई जहाज़ रहते हैं।

चपरासी—तो क्या यह उनका घर नहीं है ?

गोपाल—यह किसी का घर नहीं है। यह जङ्गी दफ़्तर है। सुना !

(चपरासी जाने लगता है। इतने ही में मालती उधर आ जाती है)

मालती—(चपरासी को पुकार कर) किसका तार है ?

चपरासी—मिस मालती का।

मालती—इधर लाओ, मेरा नाम है मिस मालती।

चपरासी—(गोपाल की ओर इशारा करके) यह तो कहते थे कि यह जङ्गी दफ़्तर है, यहाँ कोई मिस मालती नहीं हैं।

(चपरासी तार देकर चला जाता है। मालती गोपाल की ओर देखती है।)

गोपाल—(धीरे से गणेश से) यह तो मुफ़्त की बला मोल ले ली।

(दोनों खिसकना चाहते हैं)

मालती—ठहरो, किधर जाते हो ?

(दोनों डरते हुए ठहर जाते हैं। मालती तार खोल कर पढ़ती है और उदास हो जाती है।)

मालती—(गोपाल की ओर) तुम कौन हो ?

गोपाल—(धीरे से) क्या आप मुझसे पूछ रही हैं ?

मालती—हाँ तुमसे।

गोपाल—(धीरे से) क्या पूछा आपने ?

मालती—यह पूछा था कि तुम कौन हो ?

गोपाल—कौन हूँ या कौन था ?

मालती—कौन हो ?

गोपाल—कुछ घण्टों पहिले तो था, अब तो कुछ भी नहीं हूँ।

गणेश—(मालती से) यह बड़े भारी हार्मोनियम मास्टर तथा साथ ही बड़े भारी कवि भी हैं। मैं इनका मित्र हूँ। परन्तु आज कल तो छुट्टियों पर हैं।

मालती—तो क्या आजकल तुम लोग बिना काम हो ?

गोपाल—हाँ, कुछ कुछ ऐसा ही है।

मालती—यदि मैं तुम्हें काम दिला दूँ, तो तुम मेरा एक काम कर दोगे ?

गोपाल—क्या ?

मालती—तुम राजा श्यामदास को जानते हो ?

गोपाल—कलकत्ते वाले ?

मालती—हाँ।

गोपाल—भला उनको कौन सा हिन्दू नहीं जानता ?

मालती—कभी देखा है ?

गोपाल—नहीं।

मालती—तुम्हें राजा श्यामदास बनना पड़ेगा।

गोपाल—राजा श्यामदास बनना पड़ेगा, मुझको ?

मालती—हाँ तुमको।

गणेश—(गोपाल के कान में) अवसर मत छोड़ो। कुछ न कुछ लाभ ही होगा।

गोपाल—बात क्या है ?

मालती—यह तार पढ़ो।

गोपाल—(तार पढ़ता है)

(तार) कानपुर वाली गाड़ी छूट गई, अतः आने में असमर्थ हूँ।—श्यामदास

मालती—मैंने राजा साहब को आज के लिए निमन्त्रण दिया था और उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया

था। उसी बात पर मैंने मदन से शर्त भी बद ली थी। अब यह तार कहता है कि राजा साहब नहीं आ रहे हैं। जब मदन को यह पता लगेगा तो मुझे बड़ा नीचा देखना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त सब अतिथि भी जानते हैं कि राजा साहब हमारी पार्टी में आ रहे हैं। मुझे यह आशा कभी नहीं थी कि राजा साहब इस प्रकार रुक जायँगे। अब मेरी लज्जा इसी प्रकार रहेगी कि तुम राजा साहब बन कर इस पार्टी में सम्मिलित हो।

गोपाल—लेकिन मैं राजा साहब नहीं बन सकता; कोई मुझे पहचान ले?

मालती—परन्तु उन्हें यहाँ पर कोई नहीं जानता, न तुम्हें कोई जानता है। इसमें तुम्हारी कोई हानि नहीं है। बोलो, स्वीकार करते हो?

गोपाल—परन्तु.....

मालती—परन्तु कुछ नहीं। तुम्हें मेरी ख़ातिर स्वीकार करना पड़ेगा।

गोपाल—अच्छा, तुम्हारी ख़ातिर स्वीकार करता हूँ।

गणेश—(मालती से) और मैं किधर रहूँगा?

मालती—तुम इनके प्राइवेट सेक्रेटरी बन जाना।

गोपाल—देखो, किस प्रकार यह काम पार उतरता है।

मालती—सब ठीक हो जायगा, कुछ परवाह मत

करो। इसके बदले में मैं तुम्हारी कविता के संग्रह को प्रकाशित कराने में सहायता करूँगी।

गोपाल—कविता ?

मालती—हाँ ; एक प्रकाशक बाबू जी का मित्र है।

गोपाल—परन्तु मैं कवि.....

मालती—बस सब ठीक है। अब तुम यह न भूलो कि तुम राजा श्यामदास हो। मैं अब बाबू जी को लाती हूँ। उनसे तुम्हारा परिचय कराऊँगी।

(मालती जाती है)

गणेश—(गोपाल की पीठ पर हाथ मार कर) कहो, यार, कैसी रही ?

गोपाल—(गम्भीरता से) यह मत भूलो कि मैं राजा हूँ।

गणेश—सरकार ! (झुक कर प्रणाम करता है।)

(दोनों हँसते हैं तथा हाथ मिलाते हैं)

गोपाल—और तो सब ठीक है परन्तु यह कविता का झमेला तुमने क्या लगा लिया ?

गणेश—कुछ चिन्ता मत करो, सब ठीक हो जायगा।

जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरति देखी तिन तैसी॥

तुम गोपाल हो, कोई तुम्हे राजा की भाँति देखता है, कोई कवि की भाँति, कोई हार्मोनियमची की भाँति।

गोपाल—सत्य वचन महाराज।

(प्राणनाथ का प्रवेश)

गोपाल—(प्राणनाथ की ओर को) अहा राँड़नाथ !

प्राणनाथ—क्यों गोपाल, तुम.....

गणेश—(बीच में रोक कर) गोपाल नहीं, यह राजा श्यामदास हैं।

प्राणनाथ—राजा श्यामदास ? कलकत्ते वाले ?

गणेश—हाँ। और मैं इनका सेक्रेटरी हूँ।

प्राणनाथ—(हँस कर) राजा श्यामदास और उनके सेक्रेटरी ! अब कौन सा खेल खेलने की इच्छा है ? कौन इस धोखेबाज़ी का निशाना बनेगा ?

गणेश—सँभल कर बात करो। राजा साहब इस तरह की बातें नहीं सुन सकते।

प्राणनाथ—राजा साहब ? मैं अभी भण्डाफोड़ किए देता हूँ। मुझसे तुम अब कहाँ निकल कर जाओगे ?

गोपाल—राँड़नाथ जी, आपका रास्ता यह (नेपथ्य की ओर सङ्केत करके) पड़ा है।

(गोपाल व गणेश प्राणनाथ को पकड़ कर एक ओर भेज आते हैं, दूसरी ओर से मालती, दयाशङ्कर व मदन आते हैं)

मालती—(परिचय कराते हुए) राजा साहब, यह मेरे पिता लाला दयाशङ्कर जी हैं।

(दयाशङ्कर हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाते हैं। परन्तु गोपाल अपने हाथ से प्रणाम करता है।)

मालती—राजा साहब हिन्दुओं की प्राचीन रीतियों को नहीं छोड़ना चाहते हैं, इसीलिए हाथ मिलाना अनुचित समझते हैं। (गणेश की ओर देख कर) आप राजा साहब के सेक्रटरी हैं मिस्टर.....

गणेश—मिस्टर राजेन्द्रप्रसाद सिंह।

दयाशङ्कर—बिहारी नाम है?

गणेश—नहीं उधारो नाम है।

गोपाल—यदि आपको मेरे सेक्रेटरी का नाम पसन्द नहीं, तो मैं उसे अभी नौकरी से निकाल सकता हूँ।

दयाशङ्कर—नहीं राजा साहब, मुझे आप दोनों से मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई है। मेरे बड़े भाग्य कि आप मेरे घर पधारे। (मदन की ओर सङ्केत करके) यह मेरे भावी जामाता मिस्टर मदन हैं, राजा साहब! इस वर्ष आपने एम० ए०, एल० एल० बी० की परीक्षा दी है।

गोपाल—(प्रणाम करके) मेरी बड़ी दया है कि आप सब के दर्शन हुए।

मालती—मैंने आप सब से कहा था कि राजा साहब अवश्य आएँगे। परन्तु आप विश्वास ही न करते थे। राजा साहब जब मुझे रेल में मिले थे—

गोपाल—हाँ, जब मिस मालती नीचे की सीट पर बैठी थीं और मैं ऊपर लेटा हुआ था।

मालती—हाँ, उस दिन फ़र्स्ट क्लास में भीड़ अधिक थी, अतः राजा साहब ऊपर लेटे हुए थे । राजा साहब दूसरों के आराम का बड़ा ध्यान रखते हैं।

दयाशङ्कर—राजा साहब, आप अनाथों में भी कुछ सहानुभूति रखते हैं ?

गोपाल—सहानुभूति ? मेरा सारा परिवार अनाथ रहा है। मेरी माता अनाथ थी। मेरा पिता अनाथ था। और मैं भी छोटी सी आयु ही में अनाथ होगया । मेरे चचा ने मेरा पालन किया। मेरे शरीर में अनाथों का ही रक्त है।

मालती—बाबू जी, राजा साहब का बाल्यकाल सुखमय न था, परन्तु अब राजा साहब ने अपने ही परिश्रम से सारा यश वैभव बढ़ाया है।

दयाशङ्कर—महान पुरुषों के यही चिन्ह हैं।

गोपाल—अब आपकी कृपा से गाँव में एक कच्चा मकान बनवा लिया है, उसके सामने दो नीम के पेड़ हैं। एक भैंस भी है।

मालती—राजा साहब इतने वैभवशाली होते हुए भी अभिमान को पास नहीं फटकने देते । अपने राजमहलों को कच्चा मकान ही बताया करते हैं । लाखों रुपया तो प्रतिवर्ष दान में जाता है।

गोपाल—परन्तु अपनी जेब में एक पैसा भी नहीं बचता।

दयाशङ्कर—मेरा विचार एक अनाथालय गङ्गा के उस पार स्थापित करने का है।

गोपाल—यह तो बड़ी अच्छी बात होगी। मैं भी पाँच-छः अनाथ भेज दूँगा। एक मेरी बहिन का लड़का है, एक मामा का है, एक भाई की लड़की है, एक साले की।

दयाशङ्कर—और मेरा विचार है कि उसकी Opening Ceremoney (उद्घाटन संस्कार) आपके द्वारा हो। यदि आप स्वीकार कर लेंगे तो मुझे आशा है कि मेरा परिश्रम सफल होगा।

गोपाल—तो आप अनाथालय को मुझसे खुलवाना चाहते हैं?

दयाशङ्कर—यदि आपको कष्ट न हो।

गोपाल—उसमें कितने दरवाज़े हैं?

दयाशङ्कर—लगभग २५।

गोपाल—सब बड़े हैं या छोटे-छोटे?

दयाशङ्कर—सब बड़े।

गोपाल—तो क्या सब मुझे खोलने पड़ेंगे?

मालती—(दयाशङ्कर से) बाबू जी, राजा साहब का स्वभाव बड़ा हास्यप्रिय है। देखो न, बच्चों की सी बातें करते हैं।

दयाशङ्कर—बड़े आदमियों का ऐसा ही स्वभाव होता है। नहीं तो उनमें व साधारण व्यक्तियों में भेद ही क्या?

गोपाल—यह सब आपकी दया है। नहीं, मैं तो एक ग्राम का ढोल बजाने वाला हूँ।

दयाशङ्कर—राजा साहब, यदि अनुचित न हो, तो क्या मैं जान सकता हूँ कि आपके बच्चे कितने हैं?

गोपाल—बच्चे? इसका उत्तर तो मेरा प्राइवेट सेक्रेटरी देगा।

दयाशङ्कर—क्या आपको बताने में कुछ आपत्ति है?

गोपाल—नहीं, आपत्ति तो कुछ नहीं। परन्तु इन बातों का हिसाब मेरा प्राइवेट सेक्रेटरी ही रखता है।

दयाशङ्कर—ओहो, राजा साहब, आपने तबियत तो बड़ी हँसोड़ पाई है।

मालती—बाबू जी, राजा साहब के सन्तान कोई नहीं है।

दयाशङ्कर—अच्छा, राजा साहब, मुझे तो क्षमा कीजिए, मैं अन्य मेहमानों को आपके आगमन की सूचना देने जा रहा हूँ। (नेपथ्य से—ठहरिए)

(सब आश्चर्य से नेपथ्य की ओर देखने लगते हैं। प्राणनाथ का तेज़ी से प्रवेश)

प्राणनाथ—(पागल की भाँति) होशियार, ख़बरदार, धोखेबाज, चोर, डाकू, ख़ूनी, पुलीस।

दयाशङ्कर—क्या बात है ?

प्राणनाथ—यह राजा श्यामदास नहीं हैं।

गोपाल—पागल है।

गणेश—बरेली भेज दो।

मदन—यदि यह राजा श्यामदास नहीं हैं, तो फिर कौन हैं ?

प्राणनाथ—मेरा हारमोनियम बजाने वाला और वह (गणेश की ओर) है मेरा तबलची।

दयाशङ्कर—हारमोनियम बजाने वाला और तबलची ? असत्य। यह नहीं हो सकता। तुम्हारे पास कोई प्रमाण है कि यह राजा श्यामदास नहीं हैं ?

प्राणनाथ—प्रमाण तो इस समय नहीं है। परन्तु—

मालती—महाशय, प्रमाण की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको कुछ भ्रम हो गया है। मैं जानती हूँ कि यह (गोपाल की ओर) राजा श्यामदास ही हैं।

प्राणनाथ—आपको कुछ भ्रम.....।

दयाशङ्कर—बस बहुत हुआ। मैं अपनी पुत्री का विश्वास करता हूँ। अब तुम यहाँ से फ़ौरन निकल जाओ।

गोपाल—यह काम आप हमारे ऊपर छोड़ दीजिए।

दयाशङ्कर—बहुत अच्छा।

(प्रस्थान)

गोपाल—(प्राणनाथ से) राँड़नाथ जी, यह आपका रास्ता है। (गणेश व गोपाल प्राणनाथ की गर्दन पकड़ कर खोपड़ी पर चपत लगाते हुए बाहर निकाल देते हैं।)

मदन—राजा साहब, आपको कविता से तो अवश्य ही प्रेम होगा !

गोपाल—(झिझकता हुआ) प्रेम तो नहीं है, लेकिन हाँ कुछ.....

मालती—राजा साहब बड़े भारी कवि हैं।

मदन—यदि ऐसा है तो मुझे एक बात सूझ पड़ी है।

मालती—क्या ?

मदन—राजा साहब के सभापतित्व में हम अपनी परिषद् की ओर से एक कवि-सम्मेलन करें तो बड़ा अच्छा होगा। विज्ञापन में मैं यह निकलवा दूँगा कि सभापति महोदय भी अपनी रचनाओं को सम्मेलन में सुनाएँगे।

गोपाल—मुझे क्षमा करें, मैं एक का पति होकर ही बहुत दुखी हूँ, अब दूसरो का पति होना नहीं चाहता।

मदन—यदि एक बार आप सभापति हो चुके हैं तो फिर तो यह पद आपको स्वीकार करना ही पड़ेगा। आपके सभापति होने से हमारी परिषद् का नाम बढ़ जायगा।

गणेश—आप निश्चिन्त रहिए। मैं राजा साहब को सहमत कर लूँगा।

(गोपाल क्रोधपूर्वक गणेश की ओर देखता है। गणेश आँख मार देता है।)

मदन—राजा साहब, यदि कष्ट न हो तो चल कर हमारी लाइब्रेरी का निरीक्षण कर लें, पास ही है। थोड़ी देर ही में लौट आएँगे।

गोपाल—जैसी आपकी इच्छा। क्या मिस मालती नहीं चल रही हैं?

मालती—मुझे तो क्षमा करें, मैं पार्टी का प्रबन्ध देखने जा रही हूँ।

(मदन, गोपाल तथा गणेश का प्रस्थान)

(स्वयं)—अभी तक तो सब काम ठीक चल रहा है, देखें, कहीं कोई विघ्न न आ उपस्थित हो।

(चौकीदार का प्रवेश)

चौकीदार—बीबी जी, एक साहब बाहर खड़े हैं, उन्होंने यह कार्ड भेजा है।

मालती—(कार्ड देख कर चौंकते हुए, स्वतः) हैं, राजा श्यामदास? यह इस समय कहाँ से आ टपके। जिस बात की आशङ्का थी, अन्त में वह हो ही गई। अब मैं क्या करूँ? (कुछ देर तक विचार करती रहती है, फिर चौकीदार से) जाओ, उन्हें यहाँ भेज दो। (चौकीदार जाता है तथा कुछ देर में ही राजा श्यामदास को लेकर आता है।)

राजा०—हैलो, मिस मालती।

मालती—हैलो, राजा साहब ! आपने तो तार भेजा था कि गाड़ी आपने मिस कर दी, अतः आप न आ सकेंगे।

राजा—ठीक है, परन्तु पीछे मैंने विचारा कि आपको निराशा होगी। अतः मैं एक कार लेकर आया हूँ। आशा है, आप लेट होने के लिए क्षमा करेंगी।

मालती—और रानी साहिबा ?

राजा—उनकी तबियत कुछ बिगड़ी हुई सी थी, वह होटल में हैं।

मालती—मेरे सम्मुख तो एक बड़ी समस्या आ गई है।

राजा—क्यों, क्या बात है ?

मालती—यदि आप सहायता नहीं करेंगे, तो मेरा मान मिट्टी में मिल जायगा।

राजा—कहिए मेरे योग्य जो सेवा होगी, उसे बड़ी प्रसन्नता से करूँगा।

मालती—यहाँ एक दूसरे राजा श्यामदास उपस्थित हैं।

राजा—दूसरे राजा श्यामदास ? इसका अर्थ ?

मालती—बात यह है कि जब मैं आई थी, तो मैंने मदन से यह शर्त की थी कि आप अवश्य ही आएँगे। मदन कहता था कि आप नहीं आएँगे। इतने में मुझे

आपका तार मिला। उससे मुझे बड़ी निराशा हुई, क्योंकि यदि मदन को पता लगता तो सबके सामने मेरी बड़ी हँसी होती। यह बचाने के लिए मैंने एक व्यक्ति को राजा श्यामदास बना कर मदन तथा बाबू जी से मिला दिया। अब आप भी आ गए हैं। यदि सबको मेरी करतूत का रहस्य विदित हो जायगा, तो मुझे बड़ा लज्जित होना पड़ेगा।

राजा—परन्तु आपको लज्जित नहीं होना पड़ेगा। मैं किसी को यह न बताऊँगा कि राजा श्यामदास मैं हूँ।

मालती—ओह, राजा साहब, आपकी यह बड़ी दया होगी। मैं नहीं जानती कि आपको किस प्रकार धन्यवाद दूँ।

राजा—धन्यवाद की कोई आवश्यकता नहीं। मैं भी इससे कुछ मनोरञ्जन ही करूँगा। हाँ, वह व्यक्ति है कौन?

मालती—एक हारमोनियमची!

राजा—(हँस कर) चलो अच्छा है कि वह कोई शराबची या चिलमची तो नहीं है। चलिए, उससे कुछ वार्तालाप तो कराइये। देखूँ तो सही, कहाँ तक उससे मेरा पार्ट निभता है।

मालती—आइए।

(दोनों का प्रस्थान)

चौथा दृश्य

[स्थान—लाला दयाशङ्कर का बरामदा]

(गोपाल तथा गणेश का प्रवेश)

गोपाल—भई, इस तरह तो जान निकल जायगी।

गणेश—अभी से घबराते हो? अभी तो इब्तदाए इश्क़ है।

गोपाल—राजा बनना सरल नहीं है।

गणेश—इसमें क्या है, हर्रा लगे न फिटकिरी, रङ्ग चोखा ही आवे। बिना राज के राजा बन गए हो। बड़े-बड़े आदमी सर झुकाते हैं। इतना सस्ता ख़िताब तो सरकार भी नहीं देती, वर्षों चापलूसी करने पर सिर्फ़ बन्दूक़ का लाइसेन्स मिलता है।

गोपाल—राजा बनना तो आसान है, पर निभाना कठिन है। यदि चुप रहना पड़े तब भी ग़नीमत है। पर यहाँ तो लोग जान छोड़ते ही नहीं। कोई साहित्य पर बात करता है, कोई कुछ पूछता है, कोई कुछ।

गणेश—इसमें क्या है, इधर-उधर की दो बातें लगाईं और टाल दिया।

गोपाल—यदि तुम राजा होते तो माँ का दूध याद आ जाता। प्राइवेट सेक्रेटरी बन कर चुपचाप फिरते हो, इसीलिए न।

गणेश—मुझे तो अगर अमीर काबुल बना दो, फिर भी मैं न घबराऊँ।

गोपाल—(घबरा कर) ओह अमीर काबुल, एक सर्व-नाश हो गया !

गणेश—हो गया ?

गोपाल—हो गया।

गणेश—क्या पेट में दर्द है ?

गोपाल—नहीं, खोपड़ी में।

गणेश—क्या जूते पड़े थे ?

गोपाल—पड़े तो नहीं थे, पर अब पड़ेंगे।

गणेश—क्यों ?

गोपाल—आज बारह बजे की गाड़ी से वाइफ़ आने वाली थीं।

गणेश—फिर ?

गोपाल—उन्होंने लिखा था कि मैं स्टेशन पर उन्हें लेने अवश्य पहुँचूँ।

गणेश—परन्तु अब साढ़े बारह बज रहे हैं।

गोपाल—इस राजा बनने के चक्कर में पड़ कर मैं बिलकुल ही भूल गया था। अब क्या करूँ ?

गणेश—तो इतना व्याकुल होने की क्या आवश्यकता है। इक्का करके यहाँ आ जाएँगी।

गोपाल—तुम उनके विषय में कुछ नहीं जानते। वे बड़ी भयानक हैं।

गणेश—बड़ी भयानक हैं ?

गोपाल—मेरा मतलब है कि जब उन्हें क्रोध आता है तो वे बड़ी भयानक हो जाती हैं।

गणेश—कैसे ?

गोपाल—उन्हें मृगी का दौरा हो जाता है।

गणेश—मृगी का दौरा ? फिर उस दौरे में क्या करती हैं ?

गोपाल—उस दौरे में जो कोई मनुष्य सामने होता है, उसी के गले में बाँह डाल कर वे कहती हैं, 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।'

गणेश—वाह ! यह तो बड़ी रसीली स्त्री मिली है, यार !

गोपाल—है तो बड़ी रसीली, पर यह दौरे चैन नहीं लेने देते।

गणेश—फिर यह दौरा कब तक रहता है ?

गोपाल—जब तक वह मनुष्य यह नहीं कहता—'प्राणेश्वरी !' तब तक वह गले से बाँहें नहीं निकालती।

गणेश—तुम कुछ चिन्ता मत करो, मैं यहाँ हूँ।

गोपाल—(नेपथ्य की ओर देख कर) गणेश, लो एक और बला आई।

गणेश—क्या ?

गोपाल—चौकीदार आ रहा है। यह मेरा नाम जानता है। भण्डाफोड़ हो जायगा।

गणेश—फिर कहीं खिसक चलो।

गोपाल— ठहरो, मैं उसे बनाता हूँ।

(चौकीदार का प्रवेश)

गोपाल—आइए, दारोग़ा जी!

चौकीदार—मैं दारोग़ा नहीं हूँ।

गोपाल—वाह, पचास वर्ष की नौकरी के बाद तो कुत्ता भी दारोग़ा हो जाता है। अगर आप पुलिस में होते तो अब तक तो इन्स्पेक्टर हो जाते।

चौकीदार—यह तो तुम ठीक कहते हो। पर 'हुइहै वही जो राम लिखि राखा'—आजकल जोग्यता की कदर कौन करता है ?

गणेश—आप बिलकुल ठीक कहते हैं, जमादार साहब ! क्या आप सिगरेट पीते हैं ?

चौकीदार—नहीं, पर..... ।

(गणेश सिगरेट देता है)

गोपाल—हमने सुना है, जमादार साहब, कि आप जवानी में गाने के बड़े शौक़ीन थे।

चौकीदार—वे दिन गए। अब वह सुर कहाँ, न उतनी सक्ती। जवानी में तो महफिल मात होती थी।

गोपाल—वाह, जमादार साहब, यह एक ही कही। बुढ़ापे से दिल तो नहीं बदल जाता। और गाने का सम्बन्ध तो दिल से है।

गणेश—जमादार साहब, फिर कुछ हो जाय।

चौकीदार—अब तुम्हें हमारा गाना क्या अच्छा लगेगा।

गोपाल—वाह, क्यों नहीं, बुढ़ापे के गाने में जो आनन्द है वह जवानी के गाने में भी नहीं।

चौकीदार—अच्छा, फिर साथ देना।

गोपाल तथा गणेश—ज़रूर।

(चौकीदार गाता है)

तेरे गोरे नैना जुलुम करें रसिया।

गोपाल व गणेश—तेरे गोरे नैना जुलुम करें रसिया।

चौकीदार—जुलुम करें रसिया, सितम करें रसिया।
तेरे गोरे नैना जुलुम करें रसिया॥

चौकीदार—परबत भी ढूँढ़े, समुन्दर भी ढूँढ़े।
ऐसे गोरे नैना न पाए मैंने रसिया॥

गोपाल व गणेश—तेरे गोरे नैना सितम करें रसिया।

(सब एक दायरा बना कर नाचने लगते हैं तथा गाते जाते हैं)

गोपाल व गणेश—कूओं में बाँस डाले, नहरों में बल्ली।

चौकीदार—मेरे ऐसे नैना न पाए कहुँ रसिया।

गोपाल व गणेश—तेरे गोरे नैना ग़ज़ब करें रसिया।

(लक्ष्मी का क्रोध में भरे हुए आना)

लक्ष्मी—(चिल्ला कर) सो यह बात है ?

(चौकीदार भाग जाता है)

गोपाल—ओहो, प्यारी।

लक्ष्मी—बस, मुझे अब 'प्यारी' कह कर मत पुकारना! मैं स्टेशन पर मारी-मारी फिरी और तुम यहाँ भाँड़ों का सा नाच कर रहे हो!

गोपाल—लेकिन, तुम समझती नहीं हो, मुझे बड़ा आवश्यक काम आ लगा है।

लक्ष्मी—भाड़ में जाय तुम्हारा वह आवश्यक काम। मुझे तो तुमने कभी प्रसन्न न किया। (रोने लगती है) मेरे ही फूटे भाग्य हैं, जो ऐसा पति मिला। मैं, मैं...(आँखें बन्द कर व भुजाएँ फैला कर गणेश की ओर चलने लगती है)

गोपाल—दौरा!

गणेश—दौरा!

(लक्ष्मी गणेश के गले में बाँहें डाल कर कहती है, 'तुम्हें मैं प्यार करती हूँ।')

गोपाल—(धीरे से गणेश की ओर) कह दे 'प्राणेश्वरी!'

गणेश—(गोपाल की ओर ध्यान न देता हुआ) मैं जानता हूँ कि तुम मुझे प्यार करती हो।

गोपाल—(आतुरता दिखाता हुआ गणेश से) अबे, कह दे 'प्राणेश्वरी!'

गणेश—थोड़ी देर तो और रहने दे।

गोपाल—(नम्रता से) कह दे 'प्राणेश्वरी।'

गणेश—(लक्ष्मी से) 'प्रा-णे-श्वरी'

(लक्ष्मी गणेश को छोड़ देती है तथा गोपाल की ओर आती है)

लक्ष्मी—प्यारे !

गोपाल—प्यारी !

गणेश—(नेपथ्य की ओर कान करके) गोपाल, गोपाल !

गोपाल—क्यों ?

गणेश—मालती का शब्द सुनाई पड़ रहा है। शायद वह इधर को ही आ रही है।

गोपाल—(लक्ष्मी से) लक्ष्मी, तुम इस समय पास के कमरे में छिप जाओ।

लक्ष्मी—क्यों ?

गोपाल—इस समय बात करने का अवसर नहीं है, तुम्हें पीछे से सब पता चल जायगा।

(गोपाल लक्ष्मी को छिपा कर लौट आता है। गोपाल व गणेश दोनों सँभल कर खड़े हो जाते हैं। मालती राजा श्यामदास के साथ आती है।)

मालती—राजा साहब, मुझे क्षमा करें। मैं आपसे अपने पिता के एक मित्र को मिलाना चाहती हूँ।

गोपाल—क्या यह भलेमानुस हैं ?

मालती—हमारे घर के प्राचीन मित्र हैं।

(राजा श्यामदास से गोपाल की ओर सङ्केत करके) आप ही कलकत्ते के प्रसिद्ध करोड़पति राजा श्यामदास जी हैं।

राजा—आपके दर्शन करके बड़ी प्रसन्नता हुई राजा साहब!

गोपाल—कुछ हर्ज नहीं।

मालती—(गणेश की ओर) आप राजा साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी हैं।

राजा—(गणेश से) आपसे भी मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई मिस्टर.....।

गणेश—राजेन्द्रप्रसाद सिंह।

राजा—यह तो बिहारी नाम है।

गणेश—नहीं, उधारी नाम है।

राजा—(गोपाल से) राजा साहब, आप शिमला कब जा रहे हैं?

गोपाल—मैं अब उधर जाता नहीं हूँ।

राजा—लेकिन आपकी कोठी तो वहाँ है न?

गोपाल—थी तो सही, पर अब वह बेच दी।

राजा—बेच दी?

गोपाल—हाँ, आँधी में उसका छप्पर उड़ गया था।

राजा—तो आप क्या दार्जिलिंग हवा खाने जाया करते हैं?

गोपाल—जी नहीं, मैं किसी लिङ्क में हवा खाने नहीं जाता, मैं बम्बई हवा खाने जाया करता हूँ।

राजा—ओहो, तो क्या वहाँ पर भी आपकी कोठी है?

गोपाल—एक कोठी है, बाग़ है, खेत हैं, चौपाल है, घुड़साल है, रथख़ाना है, सभी कुछ है।

राजा—बम्बई में आपकी कोठी किधर है? शायद मैं भी इन गर्मियों में वहाँ आऊँ।

गोपाल—आपने बम्बई में क्या देखा है? किसी स्थान का नाम बताइए।

राजा—सात-रस्ता।

गोपाल—ठीक, सो आपने सात-रस्ता देखा है। वहाँ से छुठे रास्ते पर एक मील चलिए। फिर सीधो ओर मुड़ कर दो मील चलिए, फिर बाईं ओर मुड़ कर तीन मील चलिए, फिर नाक की सीध पाँच मील चलिए, बस सामने जो कोठो मिले, वही हमारी है। लेकिन आपको कुछ कष्ट न होगा। आप जब आएँगे तो स्टेशन पर हम अपना रथ भेज देंगे।

राजा—आपकी बड़ी कृपा है। कलकत्ता आपने कब छोड़ा था?

गोपाल—कलकत्ता मैंने नहीं छोड़ा, मुझे ही कलकत्ते ने छोड़ दिया था।

राजा—(हँस कर) यह कितने आश्चर्य की बात है।

गोपाल—(हँस कर) हाँ, यह कितने आश्चर्य की बात है।

राजा—कलकत्ते में आजकल मौसम कैसा है, राजा साहब ?

गोपाल—मौसम की क्या पूछते हैं ? बड़ा बुरा है। दिन में धूप निकलती है, रात को अँधेरा हो जाता है।

मालती—राजा साहब के यहाँ एक जीव-जन्तुओं का अजायबघर भी है।

राजा—यह तो बड़ी प्रसन्नता की बात है। राजा साहब, किस प्रकार के कीड़े-मकोड़े आप रक्खे हुए हैं ?

गोपाल—अधिक तो नहीं, कुछ चूहे, कुछ बिल्लियाँ, कुछ कुत्ते, कुछ ख़रगोश, कुछ मक्खियाँ।

राजा—हमारे यहाँ तो यह प्रसिद्ध है कि आपके यहाँ एक गवैया-भ्रमर है।

गोपाल—था तो सही, परन्तु मैंने मरवा दिया।

राजा—यह क्यों ?

गोपाल—किसी ने उसे 'मेरे मौला बुला ले मदीने मुझे' गाना सिखा दिया था।

राजा—आपसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई, राजा साहब। वास्तव में मुझे जैसी आशा थी, आप वैसे ही निकले। फिर दर्शन होंगे ?

गोपाल—देखिए, यदि सब कुछ सही सलामत रहा।

राजा—(मालती से) अच्छा मुझे तो आज्ञा है। राजा साहब के दर्शन कराने के लिए आपको धन्यवाद !

(प्रस्थान)

मालती—गोपाल, तुम तो राजा साहब का पार्ट कमाल का कर रहे हो।

गोपाल—(प्रसन्न होकर) क्या आप ऐसा समझती हैं ? मुझे तो भय था कि कहीं मुझसे यह न निभ सके।

(चौकीदार का प्रवेश)

चौकीदार—(मालती से) रानी मायारानी द्वार पर खड़ी हैं।

मालती—रानी मायारानी ? यह और क्या बला आई !

गोपाल—उन्हें आप यहाँ बुला लीजिए और मुझ पर छोड़ दीजिए।

मालती—(चौकीदार से) उन्हें भीतर भेज दो।

(चौकीदार एक ओर को तथा मालती दूसरी ओर को चली जाती है। कुछ देर में ही रानी मायारानी भीतर आती हैं, परन्तु तत्काल गोपाल व गणेश दोनों उन्हें उठाकर एक ओर को ले जाते हैं। इसके कुछ समय पश्चात् वे दोनों लक्ष्मी को साथ लिए हुए आते हैं।)

लक्ष्मी—यह क्या रहस्य है ? मुझे सारा भेद क्यों नहीं बताते ?

गोपाल—तुम्हें रानी मायारानी बनना होगा।

लक्ष्मी—क्यों ?

गोपाल—क्योंकि मैं राजा श्यामदास हूँ।

लक्ष्मी—राजा श्यामदास ?

गोपाल—हाँ।

लक्ष्मी—कलकत्ते वाले ?

गोपाल—हाँ !

लक्ष्मी—यह किस लिए ? तुम किस प्रकार राजा श्यामदास बने ?

गोपाल—अब 'किस प्रकार' मत पूछो, बस चुपचाप रानी बन जाओ। देखो तो मुफ़्त में ही हम लोग राजा-रानी बन रहे हैं। नाटक में भी तो हमें कोई राजा-रानी न बनने देगा।

लक्ष्मी—लेकिन, मुझे यह बताओ कि यह सब किसके कहने से किया है और किसके लिए किया है ?

गोपाल—यह मालती के कहने से किया है।

लक्ष्मी—वही लड़की, जिसके आने पर मुझे यहाँ से भगा दिया था ?

गोपाल—हाँ वही।

लक्ष्मी—अच्छा, अब मैं समझी कि—

गोपाल—तुम कुछ समझने का कष्ट न करो।

लक्ष्मी—कष्ट कैसे न करूँ ? तुम उस लड़की से प्रेम करते हो।

गोपाल—नहीं, प्यारी। मैं.....।

लक्ष्मी—बस, मुझे प्यारी न कहो ! (रोकर) हाय, मैं बड़ी अभागिनी हूँ जो मुझे ऐसा पति मिला। (अचानक लक्ष्मी आँखें बन्द करके तथा भुजाएँ फैला कर गणेश की ओर चलने लगती है।)

गोपाल—(चिल्ला कर) दौरा !

गणेश—दौरा !

गोपाल—गणेश, सामने खड़ा हो जा !

गणेश—अब नहीं। एक बार काफ़ी था।

(गणेश सामने से एक ओर को हट जाता है। लक्ष्मी आगे चलती है। सामने से मदन आता है। लक्ष्मी अपनी बाँहें उसके गले में डाल कर कहती है 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ !')

मदन—(भौंचक्का होकर) यह क्या !

गोपाल—कह दो 'प्राणेश्वरी !'

मदन—प्राणेश्वरी ? इस स्त्री को !

गोपाल—यह मेरी स्त्री है।

मदन—रानी साहबा ?

गोपाल—हाँ। यह मृगी का दौरा है। तुम जब तक 'प्राणेश्वरी' नहीं कहोगे, तुम्हारा गला नहीं छूटेगा।

(अचानक मालती एक ओर से आती है और आश्चर्य तथा क्रोध से मदन की ओर देखती है।)

गोपाल---(धीरे से) शीघ्र कह दो, 'प्राणेश्वरी'।

मदन---(लक्ष्मी से) 'प्रा-णे-श्वरी'।

(मालती क्रोध में भर कर एक ओर को चली जाती है। लक्ष्मी मदन को छोड़ कर गोपाल की ओर आती है। मदन का प्रस्थान)

लक्ष्मी—प्यारे !

गोपाल---प्राणेश्वरी !

लक्ष्मी---तुम राजा हो !

गोपाल---तुम रानी हो !

गणेश---और मैं प्राइवेट सेक्रेटरी हूँ।

(पर्दा गिरता है)

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान—मालती का कमरा]

(मालती गा रही है)

जिसको दिल हमने दिया वह भी हमारा न हुआ।
वह भी इस प्रेम की धारा का किनारा न हुआ॥
जिसके बल पर खड़े महलात मुहब्बत के किए।
फिर उमीदों से सजाया था उन्हें जिसके लिए॥

वह भी इस वक्ते-मुसीबत में सहारा न हुआ।
जिसको दिल हमने दिया वह भी हमारा न हुआ॥

(स्वतः) क्या संसार का यही नियम है? क्या इस प्रकृति की यही विषमय व्यवस्था है? क्या प्रेम के साम्राज्य का यही घातक क़ानून है? स्वप्न की भाँति यह सुख दिखा कर फिर हरण कर लेना; एक प्यासे मनुष्य को जल की बूदें दिखा कर उसे ठोकर लगा देना; किस लिए? क्यों मनुष्य अपने प्रेम में सच्चा नहीं रह सकता? क्या प्रत्येक मधुर फल में कुछ विष होता है? क्या प्रत्येक प्रकाशमान वस्तु के पीछे अन्धकार निहित रहता है? फिर क्यों मेरा प्रेम इस प्रकार ठुकराया जा रहा है? क्यों मेरा मदन मुझसे छीना जा रहा है? ओह मदन, मेरे मदन! (रोने लगती है

(मदन का प्रवेश)

मदन—मालती!

मालती—(चुप)

मदन—मालती!

मालती—(चुप)

मदन—क्यों डियर, इस प्रकार मौन क्यों बैठी हो?

मालती—(क्रोधित होकर) बस, मैं अधिक सहन नहीं कर सकती। मुझे 'डियर' कह कर मेरा अपमान मत करो।

मदन—अपमान ? यह तुम क्या कह रही हो ?

मालती—यह क्या कह रही हूँ ? वही जो तुम जैसे पुरुषों के सुनने योग्य है।

मदन—परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे क्रोध का क्या कारण है ? अभी घण्टे भर पूर्व तुम प्रसन्न-मुख थीं। ऐसी क्या घटना हो गई कि तुम इस प्रकार क्रोध में भर गईं ?

मालती—सब कुछ जानते हुए भी मेरे सामने बन रहे हो। परन्तु मैं भोली बालिका नहीं हूँ। मैं इस प्रकार धोखे में नहीं आ सकती।

मदन—मालती, कुछ बात हो तब तो तुम्हारा क्रोधित होना शोभा भी देता है! परन्तु इस प्रकार अकारण कोप-भवन में बैठ जाना तो बड़ा रहस्यमय प्रतीत होता है!

मालती—सब कुछ करने के बाद मुझे और जलाने आए हो। यहाँ क्या करते हो ? उसीके पास जाओ, जो प्यारी लगती है। उसीके घर जाओ, जिसे अपनी समझते हो। मैं कौन हूँ ? मुझसे क्या काम है ? मेरे हृदय को आहत करने क्यों आए हो ?

मदन—देखो मालती, कुछ घण्टों बाद ही बाबू जी सबके सामने यह घोषणा करेंगे कि हम लोगों का विवाह शीघ्र ही होगा, और तुम ऐसी बातें कर रही हो। तुम्हें क्या हो गया है ?

मालती—परन्तु यह घोषणा अब न होगी। मैं बाबू जी से जाकर मना किए आती हूँ।

मदन—(मालती को छूते हुए) परन्तु, मालती, तुम...

मालती—(मदन का हाथ हटाते हुए) मुझे मत छुओ।

मदन—तुम चाहे जो कुछ कह लो, परन्तु तुम घोषणा के लिए मना करने नहीं जा रही हो!

मालती—तो तुम क्या समझते हो कि जो कुछ मैंने थोड़ी देर पहले देखा था, उसके बाद मैं तुमसे विवाह करूँगी?

मदन—परन्तु इसका कारण क्या है? तुमने क्या देखा था? मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने अपने जीवन में तुम्हारे अतिरिक्त किसी अन्य बालिका का विचार भी नहीं किया।

मालती—क्या तुम मुझे अन्धी या बहिरी समझते हो? मैंने अपनी आँखों से देखा कि तुम एक स्त्री को आलिङ्गन कर रहे थे। मैंने अपने कानों से सुना कि तुम उसे 'प्राणेश्वरी' कह रहे थे। क्या इससे भी अधिक देखने की आवश्यकता थी? मुझे तुमसे कभी यह आशा न थी। जब तुम सगाई के समय ही इधर-उधर की स्त्रियों से ऐसा व्यवहार करते हो, तो विवाह हो जाने पर तो न जाने क्या करोगे। ओह, मैं तुम्हें घृणा करती हूँ।

मदन—ओहो, अब मैं समझा कि बात क्या है। परन्तु मैं अपनी सफ़ाई दे सकता हूँ।

मालती—क्या सफ़ाई दे सकते हो ? मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहती।

मदन—लेकिन बिना सुने सम्मति बना लेना भी तो ठीक नहीं है।

मालती—मैं सब समझती हूँ। मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहती। मैंने निश्चय कर लिया है कि जिसने मेरा प्रेम कुचल डाला, उसके साथ विवाह नहीं करूँगी।

मदन—ओह मालती, यह तुम बड़ा अन्याय कर रही हो, इतनी निर्दय न बनो।

मालती—मेरे सामने से चले जाओ।

मदन—ओह, मालती प्लीज़ ! मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ।

मालती—मेरे सामने से चले जाओ ! सुनते हो ?

मदन—प्राणेश्वरी !

मालती—(ज़ोर से) मेरे सामने से चले जाओ !

मदन—अच्छा, मैं जाता हूँ। परन्तु याद रक्खो, तुम मेरे हृदय को तोड़ रही हो। (प्रस्थान)

मालती—(पीछे दौड़ती हुई) मदन, ओह, मदन ! (कुछ देर बाद काउच के तकिए आदि पृथ्वी पर फेंकती है तथा अन्य चीज़ें तोड़ देती है) मदन, मेरे प्यारे मदन ! (रोती है)

(परदा गिरता है)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—रास्ता]

(राजा श्यामदास तथा रानी मायारानी का प्रवेश)

रानी—अपने जन्म में मैंने इतना अपमान कभी सहन नहीं किया।

राजा—क्यों, क्या हुआ ?

रानी—मैं तुम्हारे जाने के बाद, कुछ चित्त उदास हो जाने के कारण, होटल में अकेली न रह सकी।

राजा—अच्छा !

रानी—इसीलिए मैं भी लाला दयाशङ्कर की पार्टी में शामिल होने के लिए गई।

राजा—परन्तु तुमने तो मुझसे कहा था कि तुम जा ही नहीं रही थीं, नहीं तो मैं साथ ले जाता।

रानी—उस समय मेरा चित्त ठीक न था।

राजा—फिर ?

रानी—वहाँ चपरासी मुझे अन्दर ले गया।

राजा—तो क्या तुम लाला दयाशङ्कर से या मिस मालती से मिली थीं?

रानी—मिस मालती तो मुझे दिखाई दी ही नहीं। वहाँ दो आदमी खड़े हुए थे। मुझे देखते ही उन्होंने मुझे पकड़ कर मेरे मुख से कपड़ा बाँध दिया।

राजा—कपड़ा बाँध दिया?

रानी—हाँ! और फिर मुझे घसीट कर एक कमरे में बन्द कर दिया।

राजा—यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। मुझे तो यह भी पता न था कि तुम वहाँ गई थीं।

रानी—यदि मुझे यह पता होता कि यह लोग इतने असभ्य होंगे तो मैं कभी न जाती।

राजा—तो क्या वे लोग चोर थे?

रानी—भेष से तो भले आदमी दीख पड़ते थे। यह तो नहीं कह सकती कि वे कौन थे, परन्तु घर के आदमी तो मालूम होते नहीं थे।

राजा—फिर वहाँ से तुम कैसे आईं?

रानी—किसी ने मुझे एक मोटर में बिठा कर सड़क पर छोड़ दिया, वहाँ से मैं होटल चली आई।

राजा—इसका रहस्य कुछ समझ में नहीं आता। मैं तो जहाँ तक समझता हूँ, वे चोर होंगे।

रानी—यदि चोर होते तो मेरे जवाहिरात को कैसे छोड़ जाते ?

राजा—ख़ैर ! तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं हुआ था ?

रानी—कष्ट तो नहीं हुआ था, परन्तु इतना अपमान मैंने जन्म भर किसी पार्टी में सहन नहीं किया था !

राजा—अच्छा, अब चल कर तैयारी करें, कल शाम को ट्रेन से आगरा को चलना है, जिससे प्रातःकाल वहाँ पहुँच जायँ।

रानी—क्या कमरों के लिए लिख दिया है ?

राजा—हाँ, लिख तो दिया है। कमरे कृष्णा होटल में रिज़र्व करा लिए हैं।

(एक लड़का अख़बार बेचता हुआ आता है)

लड़का—(चिल्लाता है)

दैनिक 'वर्तमान'।

आगरा में शानदार कवि-सम्मेलन।

दैनिक 'वर्तमान'।

रानी—आगरे में कवि-सम्मेलन ? तब तो अवश्य देखेंगे। तुम्हें कुछ पता है इसका ?

राजा—मुझे तो कुछ पता नहीं। देखें, 'वर्तमान' में क्या लिखा है ? (लड़के को पुकार कर)

'वर्तमान' इधर लाना, भाई !

(लड़का 'वर्तमान' की प्रति दे जाता है)

रानी—(वर्तमान को पढ़ते हुए)

"प्रान्तीय युवक-परिषद के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर एक महान कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सम्मेलन कृष्णा होटल के विशाल हॉल में होगा। जनता को यह पढ़ कर गर्व होगा कि कलकत्ते के प्रसिद्ध समाज-सेवी राजा श्यामदास जी महोदय (रुक कर राजा साहब की ओर देखती है। राजा साहब भी अख़बार की ओर देखने लगते हैं) ने इस सम्मेलन का सभापतित्व स्वीकार कर लिया है। (रुक कर राजा साहब की ओर) क्यों, इस प्रकार मुझसे भेद छिपाया करते हो ?

राजा—नहीं, नहीं, मैंने भेद छिपाया नहीं।

रानी—तब इसका क्या अर्थ है ? मुझसे तो कहते थे कि तुम इस सम्मेलन के विषय में कुछ भी नहीं जानते हो और यहाँ सभापतित्व भी स्वीकार कर बैठे।

राजा—लेकिन यह कोई और श्यामदास होंगे। क्या भारतवर्ष में मैं ही अकेला राजा श्यामदास हूँ ?

रानी—भारतवर्ष में तो नहीं, पर कलकत्ते में कितने राजा श्यामदास हैं ? इसमें स्पष्ट लिखा है कि 'कलकत्ते वाले राजा श्यामदास।'

राजा—यदि ऐसा है तो यह मेरी बिना सम्मति के

किया गया है। मुझे अब तक इस सम्मेलन का पता नहीं था।

रानी—और आगे देखो—

('वर्तमान' पढ़ कर)

"राजा साहब कविता के प्रेमी ही नहीं, स्वयं भी एक बड़े कवि हैं। उन्होंने बड़ी कृपा करके अपनी रचनाओं को सुनाने का वचन भी दे दिया है। राजा साहब की इस उदारता से, आशा है कि, हिन्दी-साहित्य की वृद्धि में बड़ी सहायता मिलेगी। आशा है कि जनता सहस्रों की संख्या में राजा साहब की कविता सुनने पहुँचेगी।"

(राजा साहब से) यह एक ओर रही। मुझे अब तक यह पता भी न चला कि तुम कविता भी करते हो।

राजा—मैं यदि कविता करता तो तुम्हें पता न चलता?

रानी—तो फिर समाचार-पत्रों में यह बात किस भाँति प्रकाशित हो गई?

राजा—समाचार-पत्र वाले तो भूत होते हैं। इधर-उधर को न जाने क्या-क्या बातें प्रकाशित कर देते हैं। विवाह से पहले मैं कुछ लिखा करता था, सो अब भी उन्होंने ऐसी बातें प्रकाशित कर दीं।

रानी—परन्तु उन्हाने तो लिखा है कि तुमने स्वीकार कर लिया है।

राजा—इसमें अवश्य ही कोई भूल है। देखो, आगरा पहुँच कर सब पता चल जायगा।

(दोनों का प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

[स्थान—अनाथालय का बाहरी भाग]

(गोपाल व लक्ष्मी)

गोपाल—लक्ष्मी, देखो तुम्हारी मृगी ने मदन और मालती को अलग-अलग कर दिया।

लक्ष्मी—तो इसमें मेरा दोष क्या ?

गोपाल—और किसका दोष है ?

लक्ष्मी—मैं क्या जानती थी कि कौन मेरे सामने है।

गोपाल—अगर कहीं किसी पुलिस वाले के गले में इस प्रकार बाहें डाल दीं, तो या तो तुम्हीं मेरे हाथों से चली जाओगी, या मैं ही तुम्हारे हाथों से चला जाऊँगा।

लक्ष्मी—वियोग के बिना प्रेम का आनन्द क्या ? दुख के बिना सुख का आनन्द क्या ? जलने के बिना

सिकने का आनन्द क्या ? यही तो संसार का नियम है । प्रत्येक प्रेमी को थोड़ा-सा वियोग का अनुभव करना चाहिए । जब तक हृदय एक-दूसरे के लिए रोने न लगे, तब तक प्रेम प्रेम ही क्या ? यदि मेरी मृगी ने मालती व मदन को अलग-अलग कर दिया तो उनके भले के ही लिए। अब वे एक-दूसरे का मूल्य अधिक समझेंगे। अब उनका प्रेम अटूट प्रेम होगा।

गोपाल—ख़ाक़ अटूट प्रेम होगा। मालती अब मदन की ओर देखती भी नहीं, फिर एक-दूसरे का मूल्य कैसे अधिक समझेंगे ?

लक्ष्मी—इसकी चिन्ता न करो। मेरी मृगी ही ने उन्हें अलग-अलग किया था, मेरी मृगी ही अब उन्हें मिलाएगी।

गोपाल—लक्ष्मी ! तुम मेरे लिए एक समस्या हो, जिसे सुलझाना बड़ा कठिन है।

(गान)

गोपाल—कैसे समझूँ मैं प्यारी, बातें तुम्हारी,
तुम हो बड़ी होशियार !
आकाश-पाताल भी एक कर लूँ पाऊँ तुम्हारा न पार।
ओह नो, पाऊँ तुम्हारा न पार।
हाँ—कैसे ०।

लक्ष्मी—राजा बने तुम, रानी बनी मैं,
मानें किसी से न हार।

गोपाल—ओह नो, मानें किसी से न हार।

दोनों—जब हम हवाई जहाज़ों में उड़ कर जाएँगे करने को सैर।

चिल्लाएँगे लोग, 'लुकदेयर-लुकदेयर मिस्टर एण्ड मैडम गोपाल'!

गोपाल—हाँ, कैसे समझूँ मैं प्यारी बातें तुम्हारी, तुम हो बड़ी होशियार!

गोपाल—अच्छा, तुम्हारी गाड़ी का समय हो रहा है। घर से तुम आगरा कृष्णा होटल में आना। वहीं मेरे लिए कमरे रिज़र्व होंगे।

लक्ष्मी—अब तुम शीघ्र यह राजा का स्वाँग छोड़ दो।

गोपाल—बस आगरा में सारा खेल समाप्त हो जायगा।

(लक्ष्मी का प्रस्थान)

(गणेश का प्रवेश)

गणेश—महाराज!

गोपाल—क्या है?

गणेश—(हँस कर) लो, अब व्याख्यान देने का समय आ गया।

गोपाल—परन्तु मुझे तो कुछ आता ही नहीं।

गणेश—लाला दयाशङ्कर ने यह भाषण तुम्हारे लिए लिख दिया है।

गोपाल—तब तो जान बची। मैं इसे बस पढ़ दूँगा।

गणेश—सो नहीं।

गोपाल—फिर ?

गणेश—तुम्हें बिना इसे देखे हुए बोलना पड़ेगा।

गोपाल—यह मुझसे न होगा।

गणेश—फिर क्या करोगे ?

गोपाल—मुझे एक उपाय सूझ गया !

गणेश—क्या ?

गोपाल—तुम मेरे पीछे खड़े होकर मुझे बताते जाना, और मैं बोलता जाऊँगा।

गणेश—सूझ तो अच्छी है ! एक बार रिहर्सल कर लो।

गोपाल—(पढ़ता है)

'भाइयो तथा बहिनो !.....'

(गणेश से) लेकिन मुझे यह प्रारम्भ तो ठीक नहीं जँचता।

गणेश—क्यों ?

गोपाल—इसके स्थान में होना चाहिए था—'माँ-बाप, भाई-बहिनो, सास-ससुर, साले व सालियो।' क्योंकि वहाँ सब भाई-बहिन ही थोड़े होंगे। कुछ हमारे ससुर के सम्बन्धी होंगे, वे भाई-बहिन थोड़े ही हो जायँगे।

गणेश—अब यह नहीं ठहरा। तुम अपनी अक़्ल को इसमें न लगाओ, घिस जायगी। यह जैसी भी है, इसी प्रकार इसे याद कर लो!

(दयाशङ्कर का प्रवेश)

दयाशङ्कर—(गोपाल से) तो राजा साहब, आप तैयार हैं? सब अतिथि आपकी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं।

गोपाल—बहुत अच्छा, चलिए, मैं भी तैयार हूँ।

(सब जाते हैं। पर्दा उठता है)

(शामियाना तना हुआ है। अतिथि एक ओर खड़े हुए हैं। बीच में एक स्टूल रक्खा हुआ है। दयाशङ्कर, गोपाल तथा गणेश को साथ लेकर आते हैं। सब तालियाँ बजाते हैं।)

दयाशङ्कर—महाशयो, यह हमारे बड़े भाग्य हैं, जो हिन्दू-समाज के विख्यात नेता हमारे मध्य में इस अनाथालय का उद्घाटन करने के लिए उपस्थित हैं। आपसे अधिक सम्मानित व्यक्ति हमें इस कार्य के लिए मिलना असम्भव ही था। कदाचित् आपको यह पता नहीं है कि यह नेता हमारे माननीय राजा श्यामदास जी बहादुर हैं। (करतलध्वनि) आप अनाथों के उद्धार के लिए कितनी विशाल-हृदयता का परिचय दे रहे हैं, यह इसी से विदित हो जायगा कि आप लगभग एक दर्जन अनाथों का पालन अपनी सम्पत्ति से कर रहे हैं। (करतलध्वनि) अनाथों की समस्या जितनी गम्भीर है, वह आप पर

अविदित नहीं है। हमें इस समय ऐसे समाज-सेवियों की, जो अनाथ-रक्षा के कार्य में धन तथा समय दे सकें, कितनी आवश्यकता है, यह सब भली भाँति जानते हैं। यह अनाथालय, राजा साहब के कर-कमलों द्वारा उद्घाटित होकर, समाज-सेवा में सफल होगा, इसमें तनिक भी संशय नहीं है। अब मैं आप सब की ओर से राजा साहब से प्रार्थना करता हूँ कि वह अपने कोकिल-कण्ठ द्वारा अपना मधुर भाषण प्रारम्भ करें। (करतलध्वनि)

(कुछ समय तक करतलध्वनि होती रहती है। गोपाल सबको झुक-झुक कर उत्तर देता है। तालियाँ समाप्त होने पर वह अपना भाषण प्रारम्भ करना चाहता है, परन्तु चारों ओर से पुकार होती है, 'स्टूल पर, स्टूल पर!' अन्त में गोपाल स्टूल पर खड़ा होकर अपना भाषण प्रारम्भ करता है। गणेश उसके पीछे भाषण के नोट लेकर खड़ा हो जाता है।)

गोपाल—भाइयो और बहनो !.....(गणेश की ओर झुक कर धीरे से) बता ! आगे क्या है ?

(गणेश पृष्ठ पलटता है) भाइयो और बहिनो ! (गणेश की ओर) अबे बता !

गणेश—(धीरे से) ज़रा ठहर जा, पृष्ठ ठीक नहीं मिलता।

गोपाल—(श्रोताओं की ओर) भाइयो और बहिनो, ज़रा ठहर जा, पृष्ठ ठीक नहीं मिलता है।

गणेश—(धीरे से) अबे, मैंने यह सब के सामने कहने के लिए तो नहीं कहा था।

गोपाल—(श्रोताओं की ओर) अबे मैंने यह सबके सामने कहने के लिए तो नहीं कहा था।

(गणेश तथा दयाशङ्कर क्रोध का भाव दिखाते हैं तथा श्रोतागण तालियाँ बजा कर हँसते हैं। गोपाल समझता है कि सब उसकी प्रशंसा कर रहे हैं, अतः और भी ज़ोरों से बोलना प्रारम्भ कर देता है।)

मुझे बड़ी ख़ुशी है कि आप तालियाँ बजा कर यह दिखाते हैं कि आप मेरे भाषण को समझ सकते हैं (फिर तालियाँ बजती हैं)। मुझे बड़ा हर्ष है कि मैं आपके सामने अपने काकिल-कण्ठ से मधुर भाषण देने खड़ा हुआ हूँ और आप भी मेरे कर-कमलों से इस अनाथालय के पच्चीस दरवाज़ों को उद्.....दरवाज़ों को उद्... अँ अँ– उद्.....देखने के लिए खड़े हुए हैं। वास्तव में हम सब यहाँ खड़े हुए हैं (करतलध्वनि तथा हास्य। गणेश को पृष्ठ मिल जाता है तथा वह पढ़ने लगता है। उसी के अनुसार गोपाल आगे बोलता है) भाइयो और बहिनो! इस नगर में अनाथों की बड़ी संख्या है। उनके उद्धार की परम आवश्यकता है। उनके सबसे बड़े हितैषी, परमात्मा को छोड़ कर, इस संयुक्त प्रान्त में बस

लाला दयाशङ्कर ही हैं। आप अपना सर्वस्व अनाथों की सेवा में अर्पण कर देना चाहते हैं। (करतल ध्वनि)]

दयाशङ्कर—राजा साहब, मैं तो एक अधम व्यक्ति हूँ। आपके इन वाक्यों के लिए मुझमें योग्यता कहाँ ?

गोपाल—(दयाशङ्कर की ओर) तो फिर आपने यह वाक्य लिखवाए क्यों थे ?

(सारी सभा में पहले तो विस्मयपूर्ण शान्ति हो जाती है, फिर सब हँसने लगते हैं। दयाशङ्कर लज्जित होकर एक ओर को चले जाते हैं। उनके साथ ही कुछ मित्र भी बाहर चले जाते हैं।)

गणेश—तूने यह क्या किया, तू बड़ा गधा है !

गोपाल—(श्रोताओं से) भाइयो और बहनो, तूने यह क्या किया, तू बड़ा गधा है।

(श्रोताओं में क्रोध के भाव उत्पन्न हो जाते हैं और कुछ स्थान छोड़ कर चले जाते हैं। गणेश फिर पढ़ता है और गोपाल बोलता है।)

यह यहाँ पर बताने की आवश्यकता नहीं है कि इस नगर में एक अनाथालय की कितनी बड़ी आवश्यकता है। अनाथों की दुर्दशामय जीवन-यात्रा पर किसके आँसू नहीं निकलेंगे ? (रोने लगता है। श्रोताओं में से भी कुछ अश्रु बहाने लगते हैं) जब उनके माता-पिता उन्हें छोड़ कर स्वर्ग को चले जाते हैं..... । (रो कर) मेरे भी माता-पिता मुझे छोड़ कर स्वर्ग को चले गए थे, सो अभी तक नहीं आए। (ज़ोर से रोता है)

(श्रोताओं में से भी कुछ रोते हैं)

आप लोग धैर्य धारण करें। अब इससे क्या होता है। देखिए, मेरी तरह सन्तोष कीजिए। मैं तो तनिक भी नहीं रोता ! (रोता है)

(गणेश पीछे से वाक्य पढ़ता है, गोपाल फिर सँभल कर बोलने लगता है)

जब उनके माता-पिता उन्हें छोड़ कर स्वर्ग को चले जाते हैं, तो उन्हें विपत्तियों के साथ बड़ा भारी युद्ध करना पड़ता है।

(गणेश के हाथ से पृष्ठ हवा में उड़ जाते हैं, और वह उनके पीछे दौड़ा जाता है। श्रोतागण इस पर हँसते हैं। गोपाल समझता है कि गणेश पीछे खड़ा है, वह उससे कहता है 'बता'। श्रोतागण फिर हँसने लगते हैं, तो गोपाल कहता है 'युद्ध करना पड़ता है।' फिर वह धीरे से कहता है, 'बता' और श्रोतागण हँसने लगते हैं। तब फिर वह हँस कर कहता है, 'युद्ध करना पड़ता है।' तीसरी बार वह पीछे फिर कर देखता है और जब उसे विदित होता है कि गणेश वहाँ से चला गया तो वह कुछ देर चुप रहता है, फिर स्वयं बोलना प्रारम्भ कर देता है)

भाइयो और बहनो, युद्ध करना पड़ता है। दोनों ओर की फ़ौजें इकट्ठी हो जाती हैं। लड़ाई के बाजे बज जाते हैं। चारों ओर से 'मारो-मारो' की आवाज़ आती है। 'किधर है, कहाँ है, बाहर आओ !' सारी फ़ौज डर

जाती है। पुलीस का कप्तान कहता है, 'बन्दूक चलाओ, मैन, तुम क्या करटा है?' ऊपर से गोले गिरते हैं। हवाई जहाज़ से पानी बरसता है। सब डर जाते हैं। स्त्रियाँ कहती हैं, 'हमारे बच्चे कहाँ हैं?' बच्चे कहते हैं, 'हमारी स्त्रियाँ कहाँ हैं?' चारों ओर सन्नाटा छा जाता है। इतने में घण्टो बजती है, रथ आते हैं, हाथी उड़ने लगते हैं, ऊँट दहाड़ते हैं, शेर म्याऊँ-म्याऊँ करते हैं, चिड़ियाँ दौड़ती हैं।

(एक ओर के श्रोता चुपचाप चले जाते हैं)

इस प्रकार धृतराष्ट्र कौशल्या से बोलते भए कि हे महाराज, जब अर्जुन की सेना रावण के सामने आई तो गुरू दुर्योधन अपने हवाई जहाज़ में बैठ कर रामचन्द्र के पास पहुँचे।

(कुछ और श्रोता चुपचाप खिसक जाते हैं)

परन्तु भाइयो और बहनो, अभी तो यह कहानी शुरू भी नहीं हुई। इस सतयुग में ऐसी बातें नहीं होतीं। यदि आपको विश्वास न हो तो महादेव जी से पूछ लीजिए। वे खीरसागर में बैठे आपको बता देंगे कि कितनी खोर खानी चाहिए।

(शेष श्रोता भी चले जाते हैं और वहाँ पर गोपाल के अतिरिक्त कोई भी नहीं रहता)

लेकिन जज साहब, मैंने यह जुर्म नहीं किया। मैं इस

बच्चे की माँ नहीं हूँ। मैं एक ग़रीब विधवा हूँ और अगर सरकार मेरे पति को तीन वर्ष की क़ैद करेंगे तो मेरे चारों बाप भूखे मरेंगे ! इसलिए भाइयो और बहिनो, मैं इस अनाथालय का ताला तोड़ता हूँ ! (स्वतः धीरे से) कोई ताली नहीं बजाता !

(चारों ओर देखता है और जब किसी को वहाँ नहीं पाता, तो हँसता है)

ओहो, मैं तो अपने ही आप से बातें कर रहा था !

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

[स्थान—युवक-परिषद का आगरा-ऑफ़िस]

(मदन तथा गणेश)

मदन—तो राजा साहब कुशल-पूर्वक आ पहुँचे ?

गणेश—जी हाँ, आपकी दया से हम लोग कुशल-पूर्वक आ पहुँचे।

मदन—वालण्टियरों ने होटल में ले जाकर उतार दिया न ?

गणेश—राजा साहब दिखाना पसन्द नहीं करते, वे स्वयं ही अपना सामान लेकर होटल चले गए थे।

मदन—वैसे सब बातों का आराम है ?

गणेश—आराम सब बातों का है। अब तो गोपाल सो भी गए होंगे।

मदन—गोपाल ?

गणेश—(सँभल कर) राजा साहब गौओं के बड़े भक्त हैं, अतः कभी-कभी हम लोग उन्हें गोपाल कह कर भी पुकारा करते हैं।

मदन—राजा साहब तो सभी बातों का शौक़ रखते हैं। कल सम्मेलन में बड़ी भीड़ होगी। आगरा की जनता उनकी कविता सुनने के लिए बड़ी उत्तेजित हो रही है। जिसे देखो, वही राजा साहब के नाम की चर्चा कर रहा है।

गणेश—राजा साहब के कानपुर वाले भाषण की रिपोर्ट तो समाचार-पत्रों में अभी नहीं निकली ?

मदन—नहीं तो, क्यों ?

गणेश—चलो, ख़ैर हुई !

मदन—इसका क्या अर्थ ?

गणेश— (स्वगत) इसका यह अर्थ है कि जान बची। (प्रकाश्य) यही कि यदि जनता उन समाचारों को पढ़ती तो और भी भीड़ होती। और राजा साहब भीड़ को पसन्द नहीं करते।

मदन—इसीलिए तो हमने टिकट लगा दी है।

बिना टिकट के कोई प्रवेश न पा सकेगा। अब तो सब टिकटें बिक गईं। यदि स्थान होता तो हम सैकड़ों टिकटें और बेच सकते थे। (कुछ ठहर कर) हाँ, यह तो बताइये कि राजा साहब प्रातःकाल शीघ्र उठ पड़ेंगे? क्योंकि सम्मेलन का कार्य आठ बजे ही प्रारम्भ हो जायगा।

गणेश—इसके लिए निश्चिन्त रहिए। राजा साहब एक अलार्म चारपाई से बाँध कर सोए हैं।

मदन—यह तो बताइए कि राजा साहब ने कितनी कविताओं का संग्रह कल के लिए चुना है?

गणेश—ओह, उनकी गिनती नहीं! नई-पुरानी सैकड़ों कविताओं का उन्होंने संग्रह किया है। उनका हैण्डबैग कविताओं से ही भरा हुआ है।

मदन—अच्छा, मैं चलता हूँ। काम करना है।

गणेश—अच्छा।

(मदन का प्रस्थान। दूसरी ओर से प्राणनाथ का प्रवेश)

गणेश—अहा, राँड़नाथ जी, इधर क्या कर रहे हैं आप?

प्राणनाथ—इधर क्या कर रहा हूँ? तुम्हारा इन्तज़ार। गोपाल कहाँ है? मेरा हारमोनियम कहाँ है? मेरा तबला कहाँ है?

गणेश—बताऊँ?

(नक़ल बनाता है)

हारमोनियम राँड़नाथ के मुँह में पीं-पीं बाजे।
गञ्जे सर पै तबला धीं-धीं करता हुआ विराजे॥
भाई राँड़नाथ जी, कि भाई राँड़नाथ जी!

(मुँह बनाता हुआ जाता है)

प्राणनाथ—दग़ाबाज़, धोखेबाज़, चोर, गिरहकट, डाकू (कुछ सोच कर) अच्छा, मैं भी उन कविताओं को उससे चुरा कर बदला लूँगा।

(प्रस्थान)

चौथा दृश्य

[स्थान—आगरा, कृष्णा-होटल]

(होटल के एक भाग में तीन कमरे हैं। तीनों कमरे एक दूसरे से मिले हुए हैं। क्योंकि बीच के कमरे में दोनों ओर दरवाज़े हैं। तीनों कमरों में निकलने के लिए बरामदे की ओर को भी एक-एक द्वार है। तीनों कमरे स्टेज की ओर खुले हुए हैं। उनमें से एक बीच वाला शयन-गृह है। उसके एक ओर बैठक है, जिसमें कुछ कुर्सियाँ पड़ी हैं। दूसरी ओर स्नानागार है, जिसमें एक टब पड़ा हुआ है। शयन-गृह में एक ओर टेली-फ़ोन रक्खा है, जो चारपाई के ही पास है। चारपाई पर गोपाल

सोया हुआ है। उसकी कमर से अलार्म घड़ी बँधी हुई है। छः बजने पर अलार्म बजने लगता है।)

गोपाल—(नींद में ही यह समझ कर कि टेलीफ़ोन की घण्टी बज रही है) चुप रह!

(घड़ी बजती ही रहती है)

चुप रह! यहाँ कोई नहीं रहता। (घड़ी की घण्टी बजती रहती है। कुछ देर बाद गोपाल आँखें मलता हुआ उठता है और टेलीफ़ोन को उठा कर बोलता है) हैलो, हैलो! कौन है? हैलो! (जब कोई नहीं बोलता तो टेलीफ़ोन को छोड़ देता है। पीछे से उसे पता लगता है कि वह अलार्म घड़ी थी। उसी समय घड़ी को निकाल कर एक ओर फेक देता है। फिर शीघ्रता से कपड़े पहन कर तैयार हो जाता है।)

(गणेश का प्रवेश)

गणेश—कहिए, राजा साहब, होटल में कैसी नींद आई?

गोपाल—इस घड़ी ने बहुत तङ्ग किया।

गणेश—क्यों?

गोपाल—मैंने समझा टेलीफ़ोन की घण्टी बज रही थी।

गणेश—अब तुम राजा हो गए हो, सो हर एक प्रकार की घण्टी टेलीफ़ोन की घण्टी प्रतीत होती है। अच्छा, चलो, कुछ नाश्ता कर लें, फिर तुम्हें अपनी कविताओं का पाठ करना है।

(उसी समय बैठक में होटल का नौकर राजा श्यामदास तथा रानी मायारानी को लाकर उतारता है, क्योंकि उनके लिए भी वही कमरे रिज़र्व हुए थे, जो गोपाल के लिये।)

रानी—(कमरे को अच्छी तरह देख कर) कमरा तो अच्छा है, राजा साहब !

राजा—हाँ, होटल तो अच्छा दीखता है।

(रानी अपना बैग आदि रख कर चेहरे से पाउडर लगाती हैं। फिर पाउडर का डब्बा बन्द कर के मेज़ पर ही रख देती हैं)

रानी—अब चल कर कुछ नाश्ता कर लेना चाहिए, क्योंकि अब सम्मेलन का समय हो रहा है। वहाँ चलना भी आवश्यक ही है, क्योंकि यह देखना है कि वह कौन सा मनुष्य है, जो आपका नाम चुरा कर यहाँ सभापति बन रहा है।

राजा—तुमने टिकटें कहाँ रक्खी हैं ?

रानी—मेरे हैण्डबैग में हैं।

राजा—उन्हें सँभाल कर रखना, क्योंकि यदि वे खो गईं तो फिर भीतर जाना असम्भव हो हो जायगा, और हमारा उद्देश्य यों ही रह जायगा।

(उसी समय शयन-गृह में)

गोपाल—यह हैण्डबैग यहीं रख चलें।

गणेश—हाँ, तुमसे यह कहना तो भूल ही गया कि राँड़नाथ मिले थे।

गोपाल—राँड़नाथ ? क्या कहते थे ?

गणेश—जली-कटी सुना रहे थे । मुझे भय है कि कहीं वे इन कविताओं पर हाथ साफ़ करने की कोशिश न करें ।

गोपाल—मैं इन कविताओं को खोना नहीं चाहता, क्योंकि बड़े परिश्रम से ये कविताएँ उन प्राचीन कवियों की एकत्रित की हैं,जिनके नाम लोग बहुत कम जानते है । वे तो मर मुल्तान गए, अब मैं इन्हें अपने नाम से पढ़ सकता हूँ ।

गणेश—और यदि कोई उन कविताओं को जानते हों तो ?

गोपाल—इन्हें कम जानते होंगे, क्योंकि जानने वाले तो अब जीवित ही नहीं हैं । ये ८० वर्ष पहले की पुस्तकें हैं ।

गणेश—कौन-कौन पुस्तकें हैं ?

गोपाल—कुछ बिहारी की, कुछ देव की, कुछ मतिराम की ।

गणेश—यह नाम तो मैंने सुने भी नहीं ।

गोपाल—सुनते कैसे ? जब तक तुम पैदा हुए, वे चल बसे ।

गणेश—कोई सूरदास या तुलसीदास की तो नहीं हैं ?

गोपाल—नहीं, उन्हें तो सब जानते हैं।

गणेश—कोई इन्दरमन के चौबोला या सुल्ला के भूलना तो नहीं हैं ?

गोपाल—नहीं, इन्हें भी सब जानते हैं।

गणेश—बस, फिर कोई भय नहीं है।

(बैठक में)

रानी—यह बीच का द्वार किधर खुलता है ?

राजा—शायद पास का कमरा शयन-गृह होगा। उसी में यह खुलता मालूम देता है।

(रानी उस द्वार को खोलना चाहती हैं, कि गोपाल व गणेश की बातें सुनाई देती हैं। वह झिझक कर एक ओर को हट जाती हैं।)

राजा—क्यों, क्या हुआ ?

रानी—इस कमरे में कोई है।

राजा—यह असम्भव है। ये कमरे तो हमारे नाम रिज़र्व हो चुके हैं, यहाँ और कौन हो सकता है ?

रानी—परन्तु मैंने शब्द सुना है।

राजा—अच्छा, मैं देखता हूँ।

(राजा साहब द्वार खोलते हैं, परन्तु गोपाल व गणेश पहले ही बाहर चले जाते हैं।)

देखो तो, यहाँ तो कोई नहीं है। वह केवल तुम्हारा भ्रम था।

(दोनों शयन-गृह तथा स्नानागार को देखते हैं तथा फिर बाहर चले जाते हैं। कुछ देर बाद गोपाल व गणेश आ जाते हैं।)

गोपाल—फिर चलो, दो-एक कविताओं का पाठ कर लें।

गणेश—इस कमरे के इधर-उधर कौन रहता है ?

गोपाल—अभी तक तो देखा नहीं।

गणेश—यह द्वार खोल कर देखो।

(दोनों एक-एक द्वार को खोलते हैं)

गणेश—गोपाल, इधर तो स्नान-घर है।

गोपाल—और इधर आराम-घर है।

(दोनों बैठक में जाकर एक-एक वस्तु का निरीक्षण करते हैं)

गोपाल—(पाउडर का डब्बा खोल कर) गणेश !

गणेश—क्यों ?

गोपाल—इधर देख, यह क्या माल है ?

गणेश—(देख कर) यह तो खाँड़ मालूम होती है। लाओ, ज़रा चख कर देखूँ।

गोपाल—पहले मैं चख कर देखूँगा।

गणेश—अच्छा, तो आधा-आधा भाग कर लो।

(दोनों बाँट कर मुँह में डालते हैं और फिर मुख बना कर इधर-उधर भागते फिरते हैं।)

गोपाल—गणेश, कई दिनों से तबला हारमोनियम नहीं बजाया। चल, एक कविता का रिहर्सल हारमोनि-

यम पर करेंगे। अब तो तीन कमरे अपने अधीन हैं। टहलने के लिए काफ़ी लम्बा रास्ता है।

(दोनों हारमोनियम व तबला निकाल कर गले में लटका लेते हैं तथा बजाते हुए तीनों कमरों में फिरते हैं। फिर स्नानागार में बैठ कर बजाने लगते हैं। उधर बैठक में राजा साहब व रानी साहिबा आते हैं तथा कुछ देर बैठते हैं।)

(बैठक में)

रानी—(बाजों का शब्द सुन कर) सुना, पास के कमरे में हारमोनियम बज रहा है।

राजा—तुम्हें तो भ्रम हो गया है।

रानी—क्या तुम्हें सुनाई नहीं पड़ता ?

राजा—सुनाई तो पड़ता है, परन्तु किसी और जगह होगा।

रानी—और मैं समझती हूँ कि हमारे ही स्नानागार में है।

राजा—अच्छा, सन्देह मिटाने के लिए देख लो।

(दोनों शयन-गृह में होकर स्नानागार में जाते हैं। परन्तु उनके वहाँ पहुँचने से पूर्व ही गोपाल व गणेश बाजों सहित बाहर चले जाते हैं।)

राजा—मैंने तुमसे तभी कहा था।

रानी—शायद मेरे ही मस्तिष्क में कुछ भ्रम हो।

(दोनों फिर बैठक में चले जाते हैं। इधर गोपाल व गणेश स्नानागार में आकर कविता का रिहर्सल करते हैं)

गोपाल—प्रेम पयोनिधि में धँसि कै .....

(सोच कर) याद नहीं आता, जाकर नोटबुक में देख आऊँ।

(शयन-गृह में जाकर बैग से नोटबुक निकालता है और देख कर उसे बैग में रख देता है और बैग को बन्द करके चारपाई पर रख देता है। स्नानागार में लौट आता है।)

गणेश—देख आए ?

गोपाल—हाँ।

गणेश—फिर न भूल जाना। इस प्रकार वहाँ कैसे काम चलेगा ?

गोपाल—अब नहीं भूलूँगा।

गणेश—सँभालो हारमोनियम।

गोपाल—(हारमोनियम हाथ में लेकर) तबला ठीक है ?

गणेश—बिलकुल, तुम अलापना शुरू करो।

(गोपाल गाता है)

प्रेम पयोनिधि में धँसिकै, हँसिकै कढ़िबौ.....।

(बन्द कर देता है)

गणेश—क्यों, अब क्या हुआ ?

गोपाल—यह तो हारमोनियम पर चलने से रहा।

गणेश—फिर क्या चलेगा ?

गोपाल—कोई चलती चीज़।

गणेश—करो शुरू।

(गोपाल गाता है)

झुमका खोया रे, बरेली के बज़ार में।
सास मेरी ढूँढे, ननद मेरी ढूँढे,
सैयाँ ढूँढ़े रे.....।

(गणेश बीच ही में तबला बजाना बन्द कर देता है)

गोपाल—अब तुम्हें क्या हो गया ?

गणेश—यह कविता थोड़े ही है।

गोपाल—कविता नहीं है तो ग्रामोफ़ोन में वैसे ही भर गई ?

गणेश—जो ग्रामोफ़ोन में भरी जाय, वह कविता नहीं है। कविता वह है, जो पुस्तकों में ही लिखी रहे तथा जिसे कोई गा न सके।

गोपाल—बहुत अच्छा !

(हारमोनियम एक ओर रख देता है)

अब क्या होगा ?

गणेश—उसी को याद करो।

(गोपाल 'प्रेम पयोनिधि में' गुनगुनाता है)

(शयन-गृह में)

(प्राणनाथ शयन-गृह में आता है तथा चारपाई पर के बैग को खोलता है। कविताएँ देख कर प्रसन्न होता है और उन्हें सँभालने लगता है)

(स्नानागार में)

गोपाल—एक बार फिर देख आऊँ।

गणेश—बार-बार वहाँ जाना पड़ता है। उस बैग को यहीं क्यों नहीं ले आते ?

गोपाल—यह ठीक है।

(शयन-गृह में जाता है। उसके घुसते ही प्राणनाथ चारपाई के नीचे छिप जाता है। गोपाल बैग को स्नानागार में ले जाता है। बैठक की ओर से द्वार खुलता है। रानी मायारानी आती हैं तथा अपने बैग को चारपाई पर रख कर बैठक में चली जाती हैं। प्राणनाथ चारपाई के नीचे से निकल कर रानी मायारानी के बैग को ले जाता है। रानी उसी समय शयन-गृह में फिर आती हैं और बैग को न देख कर चिल्लाती हैं और बैठक में चली जाती हैं। उनका शब्द सुन कर स्नानागार में—)

गोपाल—यह शब्द कैसा हुआ ?

गणेश—कहाँ ?

गोपाल—शयन-गृह में।

गणेश—यहाँ कौन हो सकता है ? यह कमरे तो तुम्हारे ही लिए लिए गए हैं। परन्तु संशय मिटाने के लिए चल कर देख लो।

(दोनों शयन-गृह में जाते हैं, परन्तु वहाँ किसी को न देख कर स्नानागार को लौट आते हैं।)

(बैठक में)

राजा—क्यों, किस लिए चिल्लाई थीं ?

रानी—कोई हैण्डबैग उठा कर ले गया।

राजा—और उसीमें टिकट थे ?

रानी—हाँ।

राजा—देखो, मैनेजर से रिपोर्ट करने जाता हूँ।

रानी—तब तक मैं स्नान किए लेती हूँ।

(राजा श्यामदास बाहर जाते हैं। रानी मायारानी शयन-गृह में जाकर वस्त्र उतारने लगती हैं।)

(स्नानागार में)

गोपाल—अच्छा गणेश, तुम जाकर देखो तो कितना समय और बाक़ी है। मैं तब तक स्नान कर लूँ।

गणेश—अच्छा।

(गणेश जाता है। गोपाल अपने वस्त्र उतारने लगता है। उधर मायारानी शयन-गृह से बैठक में अपना पाउडर लेने जाती हैं, इधर गोपाल केवल धोती पहने अपना सिलीपर लेने शयन-गृह में आता है। परन्तु ज्योंही वह सिलीपर लेने के लिए चारपाई के नीचे झुकता है, त्योंही मायारानी द्वार खोल कर भीतर आती हैं। गोपाल तुरन्त ही चारपाई के नीचे छिप जाता है। मायारानी स्नानागार में जाकर जब गोपाल के वस्त्रों को वहाँ देखती हैं, तो डर कर शयन-गृह में लौटती हैं,

परन्तु जब वहाँ चारपाई के नीचे से निकलते हुए गोपाल को
देखती हैं तो चिल्लाती हैं—'चोर, चोर !' गोपाल माया-
रानी को धक्का देकर स्नानागार से अपने वस्त्र उठा
कर भागता है। मायारानी गिर पड़ती हैं।
राजा श्यामदास व होटल-मैनेजर आते
हैं तथा मायारानी को उठाने
का उद्योग करते हैं।)

(दृश्य-परिवर्तन)

(होटल का बरामदा। प्राणनाथ बैग को खोलता है तथा उसमें कविताओं को न पाकर उसे एक ओर को फेंक देता है, और 'धोखे में मारा गया' कह कर लौट जाता है। दूसरी ओर से गोपाल अपने वस्त्र हाथ में लिए भागता हुआ जाता है। पर्दा फिर उठता है और होटल के कमरों का दृश्य फिर आ जाता है।)

राजा—मायारानी, क्या हुआ था ?

रानी—(उठकर) एक चोर उस घर में आ गया था। वह स्नानागार में छिपा हुआ है।

(प्राणनाथ स्नानागार में आता है तथा बैग को खोजता है। द्वार खुलता है। राजा, रानी तथा मैनेजर का प्रवेश।)

मैनेजर—यही है चोर।

प्राणनाथ—मैं, मैं, मैं, चोर ? नहीं, नहीं, मैं तो मण्डली का मालिक हूँ !

रानी—मेरा बैग कहाँ है ?

राजा—(पकड़ कर) मेरी टिकटें कहाँ हैं ?

प्राणनाथ—मुझे कुछ पता नहीं।

मैनेजर—ठहर जा, तू योंही थोड़े बतावेगा।

(सब प्राणनाथ को पकड़ कर पीटते हैं तथा गाते हैं।)

(गान)

सब—करो-करो जूतों से इसका इलाज !

प्राणनाथ—हा, फँसा कैसी बला में मैं आज !

मैनेजर—होटल में चोरी ?

प्राणनाथ—यह सब झूठ, सब झूठ !

राजा—और सीनाज़ोरी,

प्राणनाथ—यह सब झूठ, सब झूठ !

रानी—इसने ही मुझको डराया था कमरे में छिप कर के
शय्या की ओट।

प्राणनाथ—गोपाल की सारी करतूत होगी, इसमें नहीं
मेरा खोट !

सब—चुप रह, तू है बड़ा धोखेबाज़।
करो-करो जूतों से इसका इलाज ॥

(पीटते हुए उसे ले जाते हैं।)

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान—कृष्णा होटल का हॉल]

(कवि-सम्मेलन के मञ्च पर गोपाल, गणेश, मदन तथा कुछ कवि बैठे हुए हैं।)

मदन—भाइयो, अब कविओं की रचनाएँ तो समाप्त हो गईं। अब आप राजा साहब की कविताएँ सुनने के इच्छुक होंगे।

श्रोता—राजा साहब, राजा साहब!

मदन—अब आपके सामने राजा साहब अपनी कुछ रचनाएँ पढ़ेंगे!

(करतल-ध्वनि)

गोपाल—भाइयो, अच्छा हो कि आप मुझे क्षमा करद। क्योंकि मैंने कभी कविताएँ नहीं बनाईं।

श्रोता—नहीं, नहीं, कुछ कविताएँ सुनानी पड़ेंगी।

गोपाल—मैं कवि नहीं हूँ, आपने बड़े-बड़े कवियों की रचनाएँ सुनी हैं।

श्रोता—हम दो-चार कविताएँ अवश्य सुनेंगे।

गणेश—भाइयो, राजा साहब बड़े लज्जाशील हैं, इसीलिए कुछ नहीं सुनाते हैं। नहीं तो आपके पास बैग में कविताओं का गट्ठा भरा पड़ा है।

(गोपाल वक्र दृष्टि से गणेश की ओर देखता है। गणेश हँसता है। जनता का आग्रह देखकर गोपाल कुछ काग़ज़ निकाल कर पढ़ना प्रारम्भ करता है।)

(दोहा)

अमी हलाहल मद भरे, स्वेत-स्याम रतनार,
जियत-मरत झुकि-झुकि परत, जिहि चितवत इक बार।

एक कवि—(चिल्ला कर) यह राजा साहब का पद नहीं है। यह तो बिहारी का है।

गणेश—आप लोग राजा साहब की कविता में विघ्न न डालिए। चाहे यह पद बिहारी का हो, चाहे बङ्गाली का, आप राजा साहब के मुखारविन्द से सुनिए। पीछे जो कुछ कहना हो सो कहिए।

कवि—यह अन्याय है!

मदन—पहले आप शान्त होकर सुन लीजिए!

गोपाल—(पढ़ता है)

प्रेम पयोनिधि में फँसिकै हँसिकै कढ़िबौ हँसि-खेल नहीं है।

(करतल-ध्वनि)

कवि—(जनता से) आप किसके लिए यह तालियाँ बजा रहे हैं? यह सब पुरानी रचनाएँ हैं। इस चोरी को कोई भी साहित्य-सेवी नहीं सहन कर सकता।

गणेश—भाइयो, यह एक साधारण बात है। अभी तक जो पद आपके सामने राजा साहब ने सुनाए हैं,

वह यह दिखाने के लिए कि प्राचीन काल में इस प्रकार की कविता होती थी, परन्तु अब कविता में कितना परिवर्तन हो गया है। अब आप राजा साहब की कविताओं को भली प्रकार समझ सकेंगे। राजा साहब पुरानी बातों के पक्षपाती नहीं हैं। उन्होंने कविता में अनेकों परिवर्तन कर दिए हैं। वास्तव में राजा साहब आपको नए रङ्ग की कविता सुनाएँगे।

(करतल-ध्वनि)

गोपाल—इसके पहले कि मैं आपको नए रङ्ग की कविता सुनाऊँ, मैं आपको एक कविता पुराने रङ्ग की सुनाना चाहता हूँ।

(कविता)

सब बस्तर बसन्ती, उनके अस्तर बसन्ती,
घर में पञ्चस्तर बसन्ती और सब बिस्तर बसन्ती हैं।

(करतल-ध्वनि)

बाँह में नस्तर बसन्ती, हाथ में सस्तर बसन्ती,
घर में मिट्टी के तेल का कनस्तर बसन्ती है।

(करतल-ध्वनि)

कवि—भाइयो, मैं आपको फिर चेतावनी देता हूँ। यह कविता नहीं है! यह तो हिन्दी-भाषा का .खून किया जा रहा है।

गोपाल—(घबरा कर) शु, शु, .खून का नाम न लेना। पुलिस आ जाएगी। आपस में ही समझौता कर लो।

कवि—आप शास्त्रार्थ कर लीजिए!

गोपाल—(धीरे से) क्या कर लीजिए?

कवि—शास्त्रार्थ!

गोपाल—यह तो परमात्मा के अधीन है। हमारे आपके हाथ की बात थोड़े ही है।

कवि—आपने पिङ्गल का गला काट दिया है।

गोपाल—भला यह कैसे हो सकता है? मैंने तो अपने जन्म में पिङ्गल को देखा भी नहीं। मुझे उस बेचारे का गला काटने की क्या पड़ी थी। क्या वह आपका कोई सम्बन्धी था? आपने गवर्नमेण्ट से पूछा था, शायद वह लड़ाई में मारा गया हो या फिर काले बुख़ार में न चल बसा हो।

कवि—जहाँ पिङ्गल तथा अनुप्रास का ज्ञान नहीं, वहाँ कविता की शुद्धता कैसे पाई जा सकती है?

गणेश—राजा साहब पिङ्गल और अनुप्रास को पुराना समझ कर इनकी आवश्यकता नहीं समझते।

गोपाल—अब हम पिङ्गल को नहीं मानते, हम 'सिङ्गल' को मानते हैं।

कवि—'सिङ्गल' क्या?

गोपाल—कविता का अर्थ है कि जो कुछ मुख में

आवे, वह बिना किसी रुकावट के कह दिया जाय। इसके लिए केवल एक चीज़ की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार रेलगाड़ी को सिङ्गल दिखाया जाता है कि लाइन साफ़ है, उसी प्रकार कवि को सिङ्गल की आवश्यकता होती है कि उसका मस्तिष्क साफ़ है और कविता बिना रुकावट के आ सकती है।

(करतल-ध्वनि)

(कवि लोग यह कह कर कि 'यहाँ हिन्दी-भाषा का उपहास हो रहा है' बाहर निकल जाते हैं।)

गोपाल—अब आप शान्ति से सुनिए। मेरा सिङ्गल डाउन है। मैंने इसी समय सिङ्गल पर एक कविता बना डाली है।

(कविता)

पिङ्गल के गले में लगाओ फाँसी कम्मल की,
बागन में कविता नहीं तो भग जायगी।
पास अनुप्रास के न जाओ कभी भूल के भी,
बाँस की अँगुरियों में फाँस लग जायगी।
कवि के दिमाग़ का गिराओ शीघ्र सिङ्गल तुम,
नहीं तो अशुद्धी की तोप दग जायगी।
जाने दो कुशलता से राजा श्यामदास को अब,
खोपड़ी की खुजली नहीं तो जग जायगी।

(श्रोता चिल्लाते हैं, 'हिन्दी भाषा की जय ! राजा श्यामदास की जय।')

(पर्दा गिरता है)

छठा दृश्य

[स्थान—मार्ग]

(मालती का गाते हुए प्रवेश)

(गान)

पीया बिना बेचैन रे, जियरवा पीया बिना बेचैन !
अरे जियरवा रे, पीया बिना बेचैन।
रोवत-रोवत दिन बीतत हैं,
जागत बीतत रैन—
जियरवा पीया बिना बेचैन।

(दोहा)

काँटौ लागौ प्रेम कौ, जाके हिरदे माँहि,
जतन करे पै हू कसक, वाकी निकसत नाहिं।
जियरवा पीया बिना बेचैन।

(शैर)

किसी को चोट लगती है, कोई ताली बजाता है,
किसी के आग लगती है, कोई कपड़े सुखाता है।
जियरवा पीया बिना बेचैन।

अपने दिल को ही सुनाती मैं अपने दर्द की बात,
हाय, अफ़सोस, मगर वह भी मेरे पास नहीं।
जियरवा पीया बिना बेचैन।
रोवत-रोवत दिन बीतत हैं,
जागत बीतत रैन ॥ जिय० ॥

(स्वतः) इस जीवन से क्या लाभ? जिसका प्रेम ठुकरा दिया जाय, जिसका हृदय-मन्दिर मूर्तिविहीन हो जाय, उसका जीवन क्या और उसकी मृत्यु क्या? मदन को इतना निष्ठुर मैं नहीं समझती थी। जिस दिन से वह घटना घटी है, मेरी ओर उसने देखा भी नहीं है। क्या उसका यह कर्तव्य न था कि एक बार आकर तो खेद-प्रकाश करता। वह तो नहीं, और उल्टा मुँह फुलाए डोलते हैं। समझते होंगे कि मैं मनाऊँगी। पर मैं क्यों मनाऊँ? दोष आपका और मनाऊँ मैं। देखना है, कब तक तने रहते हैं!

(नेपथ्य से—'मालती!')

मालती—(नेपथ्य की ओर देख कर) गोपाल!

(गोपाल का प्रवेश)

गोपाल—मैंने सुना है कि लाला दयाशङ्कर को यह पता चल गया है कि मैं राजा श्यामदास नहीं हूँ।

मालती—हाँ, यह ठीक है! मैंने ही पीछे से बाबू जी को सब बातें बता दी थीं।

गोपाल—तुमने ?

मालती—वह भेद कितने दिनों छिपा रहता ? फिर वह सब मदन के लिए था। उसके बाद—

(उदास हो जाती है)

गोपाल—मालती, तुम इतनी उदास क्यों हो ?

मालती—उदास ? नहीं तो (भाव बदल कर) हाँ, मैं तुमसे यह कहना चाहती थी कि बाबू जी इस बात से प्रसन्न ही हुए और तुम्हें अनाथालय में सङ्गीत का अध्यापक नियत किया है।

गोपाल—मालती, तुम्हारा बड़ा धन्यवाद है। यह सब तुम्हारी ही दया है। परन्तु मैं इस समाचार से इतना प्रसन्न नहीं हूँ।

मालती—क्यों ?

गोपाल—क्योंकि तुम्हारे तथा मदन के झगड़े का कारण मैं हूँ।

मालती—तुम ? यह कैसे हो सकता है ?

गोपाल—वह मेरी स्त्री थी।

मालती—(आश्चर्य से) तुम्हारी स्त्री ?

गोपाल—हाँ !

मालती—फिर भी इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता।

गोपाल—पड़ता है।

मालती—कुछ नहीं। मैंने स्वयं देखा था कि मदन उसे हृदय से लगा कर कह रहा था, 'प्राणेश्वरी !'

गोपाल—यही तो सारा रहस्य है, जिसे तुम नहीं समझती हो !

मालती—रहस्य ? इसमें रहस्य क्या हो सकता है ?

गोपाल—मेरी स्त्री को मृगी-रोग है।

मालती—अच्छा !

गोपाल—उसे जब दौरा होता है, तो वह पास खड़े हुए पुरुष के गले में बाँहें डाल कर कहती है, 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।' और जब तक वह पुरुष 'प्राणेश्वरी' नहीं कह देता, वह गला नहीं छोड़ती।

मालती—मुझे इस प्रकार विश्वास नहीं होता।

(क्रोध में भरे हुए लक्ष्मी का प्रवेश)

लक्ष्मी—(गोपाल से) क्यों, फिर तुम इससे बातें कर रहे हो और मुझे अकेला छोड़ कर चले आए ? हाय, भगवान, मैं बड़ी अभागिनी हूँ।

(आँखें बन्द करके दौरे के प्रकोप का दृश्य दिखाती है)

गोपाल—(व्यग्रता से) दौरा ! दौरा !!

मालती—यह क्या ?

गोपाल—अब तुम्हें विश्वास हो जायगा।

(लक्ष्मी हाथ फैला कर एक ओर को चलती है। उधर से एक पुलिसमैन आता है। लक्ष्मी उसके गले में बाँहें डाल कर

कहती है, 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।' पुलिसमैन आश्चर्य से चारों ओर देखता है)

पुलिसमैन—(गोपाल से) क्यों, यह कौन है ?

गोपाल—(धीरे से) मेरी स्त्री।

पुलिसमैन—इसका क्या अर्थ है ?

गोपाल—यह मृगी का प्रभाव है। कह दो, 'प्राणेश्वरी !'

पुलिसमैन—(क्रोधित होकर) 'प्राणेश्वरी', इससे ?

गोपाल—नहीं तो गला नहीं छूटेगा !

पुलिसमैन—(खीझ कर) बला कहीं की। प्रा-णे-श्व-री!

(लक्ष्मी पुलिसमैन का गला छोड़ देती है)

गोपाल—(पुलिसमैन से) धन्यवाद ! अबकी बार आपको एक थाना भेंट में दूंगा।

पुलिसमैन—हाँ, और यदि फिर तुमने यह शरारत की तो तुम्हीं पहले क़ैदी वहाँ पर होगे।

(प्रस्थान)

मालती—मुझे दुःख है कि मैंने मदन पर ऐसा लाञ्छन लगाया। न जाने वह मुझे क्षमा करेगा भी।

गोपाल—इसकी चिन्ता न करो। मुझ पर सब छोड़ दो। मैं जिस प्रकार हारमोनियम के स्वर मिलाता हूँ, उसी प्रकार बेसुरे हृदयों को भी मिलाता हूँ।

मालती—(लक्ष्मी से) मुझे बड़ा दुःख है कि आपको इस प्रकार मृगी-रोग तङ्ग करता है।

लक्ष्मी—आप इस बात का दुःख न करें। यह मृगी का प्रभाव नहीं था।

मालती—(विस्मय से) नहीं था ?

गोपाल—(क्रोध भाव से) सो यह मृगी का प्रभाव नहीं था ? फिर क्या था ?

लक्ष्मी—यह सब मैं जान कर करती थी।

गोपाल—ओह !

मालती—यह किस लिए ?

लक्ष्मी—गोपाल को ईर्ष्या लगा कर वश में रखने के लिए !

(सब हँसते हैं। नेपथ्य में मदन का शब्द आता है)

गोपाल—यह तो मदन का शब्द है ! चलो, लक्ष्मी, हम मदन को मनावें। तुम, मालती, उस ओर को मुख करके बेहोशी का बहाना करके लेट जाओ।

(मालती बेहोश होकर लेट जाती है। मदन दूसरी ओर से आता है।)

गोपाल—मदन !

मदन—राजासाहब ! यह क्या ?

गोपाल—यह स्त्री बेहोश होगई है। इधर आके ज़रा देखो तो !

(मदन मालती की ओर जाकर देखता है, परन्तु मुख ढका रहने के कारण पहचान नहीं सकता। धीरे से गोपाल व लक्ष्मी वहाँ से खिसक जाते हैं।)

मदन—(मालती के मुख से वस्त्र हट जाने पर पहचान कर) अरे, यह तो मालती है। मालती, मालती ! बोलो, देखो, मैं मदन हूँ। ओह, मालती, एक बार नेत्र खोलो, मैं तुम्हें अब भी प्यार करता हूँ।

(मालती नेत्र खोल कर हँसती है)

मालती—ओह, मदन, मुझे कितना हर्ष है कि तुम अब भी मुझे प्यार करते हो।

मदन—(अचानक मालती को छोड़ कर) परन्तु मैं-मैं-

(चलने लगता है। मालती पीछे से पकड़ती है)

मालती—मदन, वह मेरी भारी भूल थी। मुझे सब रहस्य विदित हो गया है। मैं ईर्ष्या से अन्धी हो गई थी। मुझे बड़ा दुःख है।

मदन—इसके लिए धन्यवाद ! परन्तु मुझे अब जाना है—गुडबाई !

(चलता है। परन्तु मालती पकड़ लेती है)

मालती—इतने कठोर न बनो, मदन ! तुम मेरे सर्वस्व हो। क्या मुझे क्षमा न करोगे ?

मदन—अब तुम क्षमा माँगती हो ? उस समय

तुमने मेरे मुख से एक शब्द तक न सुना और मुझे अपमानित कर के निकाल दिया।

मालती—(गम्भीर होकर) तो क्या तुम मुझे क्षमा न करोगे ?

मदन—नहीं।

मालती—मदन, मेरे नेत्रों की ओर देखो !

(मदन देखता है)

बोलो, तुम मुझे प्यार करते हो ?

मदन—(मालती का हाथ पकड़ कर) ओह, मेरी मालती, मैं नहीं जानता, इस समय तुम्हें क्या कह कर पुकारूँ—

(नेपथ्य से शब्द आता है, 'प्राणेश्वरी !' एक ओर से लाला दयाशङ्कर, राजा श्यामदास व रानी मायारानी का प्रवेश तथा दूसरी ओर से गोपाल, गणेश व लक्ष्मी का प्रवेश। सब गाते हैं।)

(गान)

मदन—

प्राणों से प्रिय प्राणेश्वरी !
शुभ्रज्योत्स्ना से भी शीतल
हो मम हृदय-उजागरी !

सब—

यही है प्रार्थना, 'सुख से बिताओ
प्रेम-मय जीवन,
लगाओ देश की सेवा में दोनों
अपना तन, मन, धन।'

मदन व मालती—

प्रतिज्ञा है कि सेवा-धर्म व्रत
अपना बनाएँगे।
यह जीवन हिन्द, हिन्दी और
हिन्दू हित लगाएँगे॥

सब—

दृष्टि लगी है युवकों पर ही
माता की आशाभरी!
प्राणों से प्रिय प्राणेश्वरी!

[ड्रॉप सीन]

लेखक की अन्य पुस्तक

जो तैयार हो रही हैं

और

शीघ्र ही छप कर प्रकाशित होंगी

१—देवी जोन

देवी जोन की करुण कहानी, जो लेखक ने बड़ी खोज के साथ और फ्रान्स में किए गए व्यक्तिगत अनुभव के बाद लिखी है, हिन्दी में एक अद्वितीय पुस्तक होगी। साथ ही बिलकुल नए सुन्दर चित्र भी रहेंगे।

२—पूर्व या पश्चिम

लेखक की क़लम का जादू इस उपन्यास में आपको प्रत्येक स्थल पर देखने को मिलेगा। आप लेखक के साथ विदेश की यात्रा भी करेंगे और लेखक के भावुक हृदय की कल्पनाओं का रसास्वादन भी। यदि आपके सामने पूर्व और पश्चिम में से एक को पसन्द करने का प्रश्न हो, तो आप उसका उत्तर इस पुस्तक में पा सकेंगे।

हमारे विस्तृत विज्ञापनों की प्रतीक्षा कीजिए

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक—इलाहाबाद